Sample

Model: C2,MD,P4

SrNo: 101-107-101-1118 / 338 Date: 20/05/2013

लिंग	स्त्रीलिंग	दादा का नाम	
जन्म तिथि	**20/05/2013**	पिता का नाम	
दिन	सोमवार	माता का नाम	
जन्म समय	**15:00:57 घंटे**	जाति	
इष्ट	23:51:07 घटी	गोत्र	
स्थान	**Jabalpur**		
देश	India		

अक्षांश	23:10:00 उ	चैत्रादि संवत्-शक संवत	2070 / 1935
रेखांश	79:57:00 पू	माह	वैशाख
मध्य रेखांश	82:30:00 पू	पक्ष	शुक्ल
स्थानिक संस्कार	-00:10:12 घंटे	सूर्योदय कालीन तिथि	10
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे	तिथि समाप्ति काल	22:18:19
वेलान्तर	00:03:28 घंटे	जन्म तिथि	10
साम्पातिक काल	06:43:34 घंटे	सूर्योदय कालीन नक्षत्र	पूर्वाफाल्गुनी
सूर्योदय	05:28:30 घंटे	नक्षत्र समाप्ति काल	05:49:38 घंटे
सूर्यास्त	18:45:15 घंटे	जन्म नक्षत्र	उत्तराफाल्गुनी
दिनमान	13:16:45 घंटे	सूर्योदय कालीन योग	हर्षण
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण	योग समाप्ति काल	14:06:07 घंटे
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर	जन्म योग	वज्र
ऋतु	ग्रीष्म	सूर्योदय कालीन करण	तैतिल
सूर्य के अंश	05:29:10 वृष	करण समाप्ति काल	10:38:47 घंटे
लग्न के अंश	15:57:30 कंया	जन्म करण	गर
भोग्य दशा काल	सूर्य 3 वर्ष 8 मा 21 दि		

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कंया - बुध
राशि-स्वामी	**कंया - बुध**
नक्षत्र-चरण	**उत्तराफाल्गुनी - 2**
नक्षत्र स्वामी	सूर्य
योग	वज्र
करण	गर
गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	आद्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	मानव
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	टो
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृष

घात चक्र

मास	भाद्रपद
तिथि	5-10-15
दिन	शनिवार
नक्षत्र	श्रवण
योग	शुक्ल
करण	कौलव
प्रहर	1
वर्ग	मेष
लग्न	मीन
सूर्य	मेष
चन्द्र	वृश्चिक
मंगल	वृष
बुध	मीन
गुरु	मिथुन
शुक्र	कर्क
शनि	मीन
राहु	सिंह

Future Point (P) Ltd.
D-68, Hauz Khas, New Delhi-110016
Ph.: 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामीअं.	स्थिति	गति	षट्बलचर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			15:57:30	कंया	हस्त	2	चंद्र शनि	--	00:00:00	0:00		
सूर्य			05:29:10	वृष	कृति	3	सूर्य बुध	शत्रु	00:57:44	1.41 ज्ञाति	पितृ	जन्म
चंद्र			01:43:22	कंया	उफा	2	सूर्य गुरु	मित्र	13:17:13	1.18 कलत्र	मातृ	जन्म
मंग		अ	28:00:20	मेष	कृति	1	सूर्य चंद्र	स्व	00:43:27	1.30 आत्मा	भ्रातृ	जन्म
बुध			15:37:34	वृष	रोहि	2	चंद्र गुरु	मित्र	02:04:46	0.76 मातृ	ज्ञाति	सम्पत
गुरु			27:36:37	वृष	मृग	2	मंग गुरु	शत्रु	00:13:18	1.23 अमात्य	धन	विपत
शुक्र			19:10:57	वृष	रोहि	3	चंद्र बुध	स्व	01:13:36	1.00 भ्रातृ	कलत्र	सम्पत
शनि	व		12:33:37	तुला	स्वा	2	राहु बुध	उच्च	-00:04:00	1.38 पुत्र	आयु	क्षेम
राहु			22:45:52	तुला	विश	1	गुरु शनि	मित्र	00:01:22	---	ज्ञान	प्रत्यारि
केतु			22:45:52	मेष	भर	3	शुक्र शनि	मित्र	00:01:22	---	मोक्ष	अतिमित्र

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:02:50

लग्न-चलित

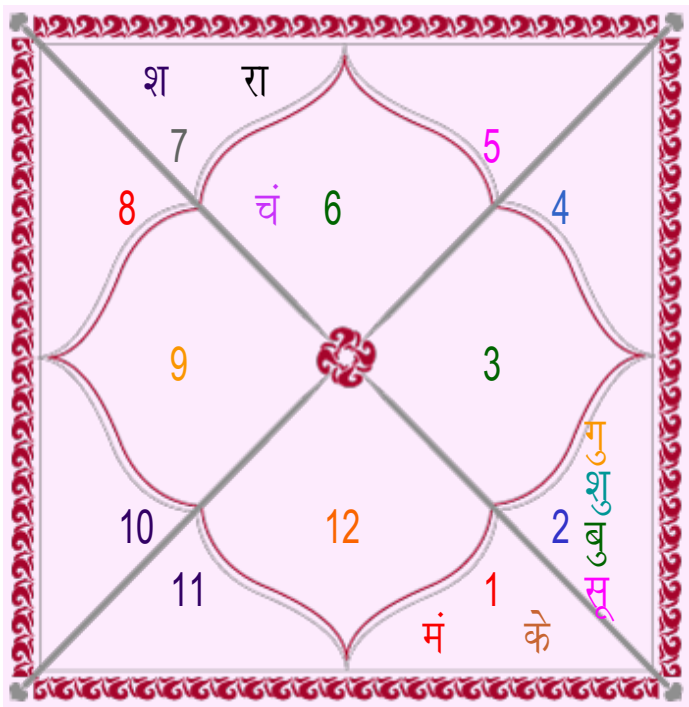

चन्द्र कुंडली

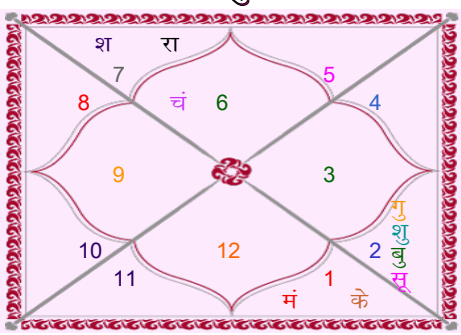

नवमांश कुंडली

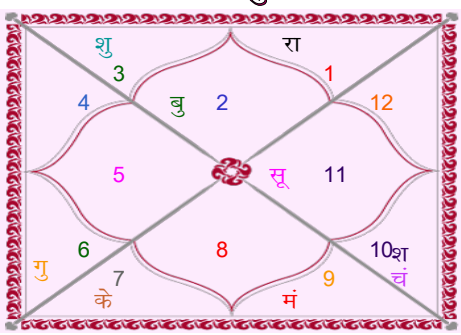

Future Point (P) Ltd.
D-68, Hauz Khas, New Delhi-110016
Ph.: 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कन्या	00:57:35	कन्या	15:57:30
2	तुला	00:57:35	तुला	15:57:39
3	वृश्चिक	00:57:44	वृश्चिक	15:57:49
4	धनु	00:57:54	धनु	15:57:58
5	मकर	00:57:54	मकर	15:57:49
6	कुम्भ	00:57:44	कुम्भ	15:57:39
7	मीन	00:57:35	मीन	15:57:30
8	मेष	00:57:35	मेष	15:57:39
9	वृष	00:57:44	वृष	15:57:49
10	मिथुन	00:57:54	मिथुन	15:57:58
11	कर्क	00:57:54	कर्क	15:57:49
12	सिंह	00:57:44	सिंह	15:57:39

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	15:57:30
2	तुला	14:59:49
3	वृश्चिक	15:14:22
4	धनु	15:57:58
5	मकर	16:58:13
6	कुम्भ	17:29:27
7	मीन	15:57:30
8	मेष	14:59:49
9	वृष	15:14:22
10	मिथुन	15:57:58
11	कर्क	16:58:13
12	सिंह	17:29:27

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उफा	हस्त	चित्र	स्वा	विश	अनु	ज्ये	मू	पूषा
उषा	श्रव	धनि	शत	पूभा	उभा	रेव	अशि	भर
कृति	रोहि	मृग	आर्द्र	पुन	पुष्य	आश	मघा	पूफा

चलित कुंडली

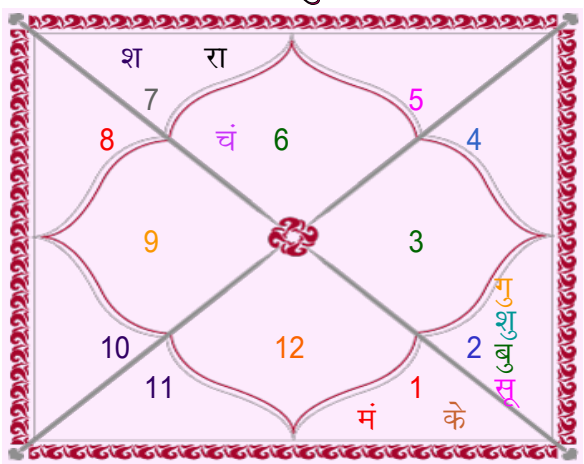

भाव कुंडली

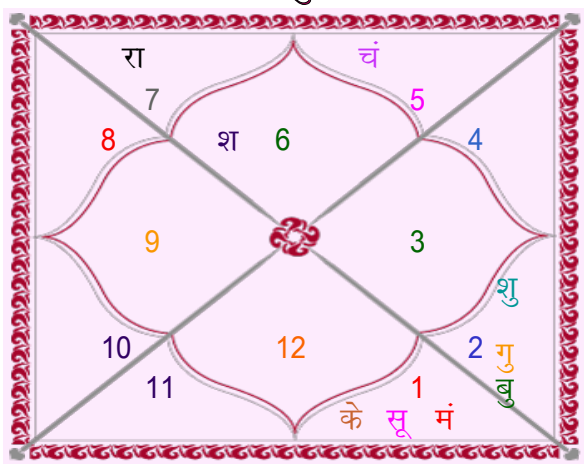

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------		------- अवस्था -------			रश्मि	ग्रह
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	ज्ञाति	पितृ	मृत	खल	कौतुक	3.43	59 %
चंद्र	कलत्र	मातृ	मृत	मुदित	गमन	3.06	72 %
मंग	आत्मा	भ्रातृ	मृत	विकल	उपवेशन	0.00	30 %
बुध	मातृ	ज्ञाति	युवा	मुदित	शयन	1.68	12 %
गुरु	अमात्य	धन	बाल	खल	उपवेशन	2.22	44 %
शुक्र	भ्रातृ	कलत्र	कुमार	स्वस्थ	गमन	8.52	51 %
शनि	पुत्र	आयु	युवा	दीप्त	गमन	14.38	35 %
राहु	---	ज्ञान	वृद्ध	मुदित	शयन	0.00	54 %
केतु	---	मोक्ष	वृद्ध	मुदित	कौतुक	0.00	54 %
कुल						33.30	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उफा	हस्त	चित्र	स्वा	विश	अनु	ज्ये	मू	पूषा
उषा	श्रव	धनि	शत	पूभा	उभा	रेव	अश्वि	भर
कृति	रोहि	मृग	आर्द्र	पुन	पुष्य	आश	मघा	पूफा

चलित कुंडली

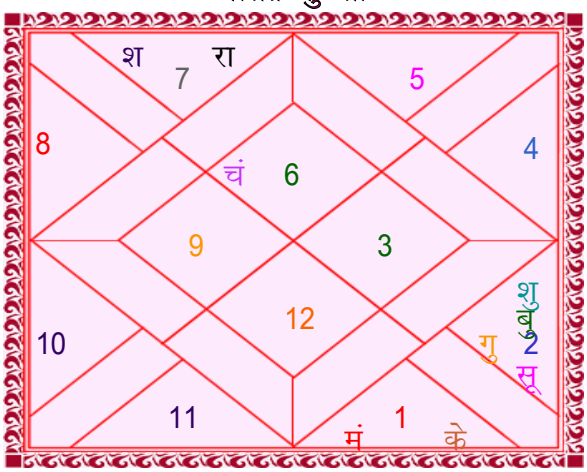

लग्न-चलित

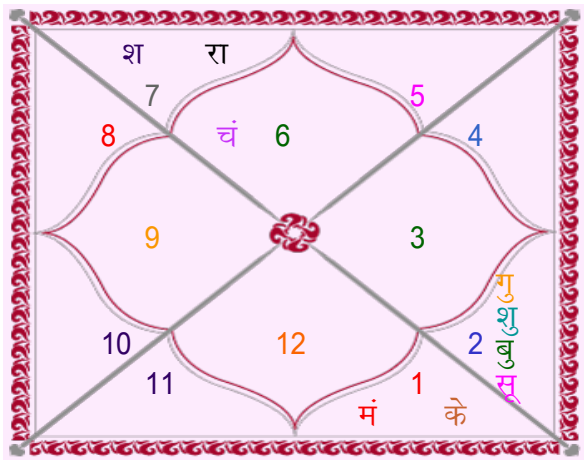

।। सुदर्शन चक्र ।।

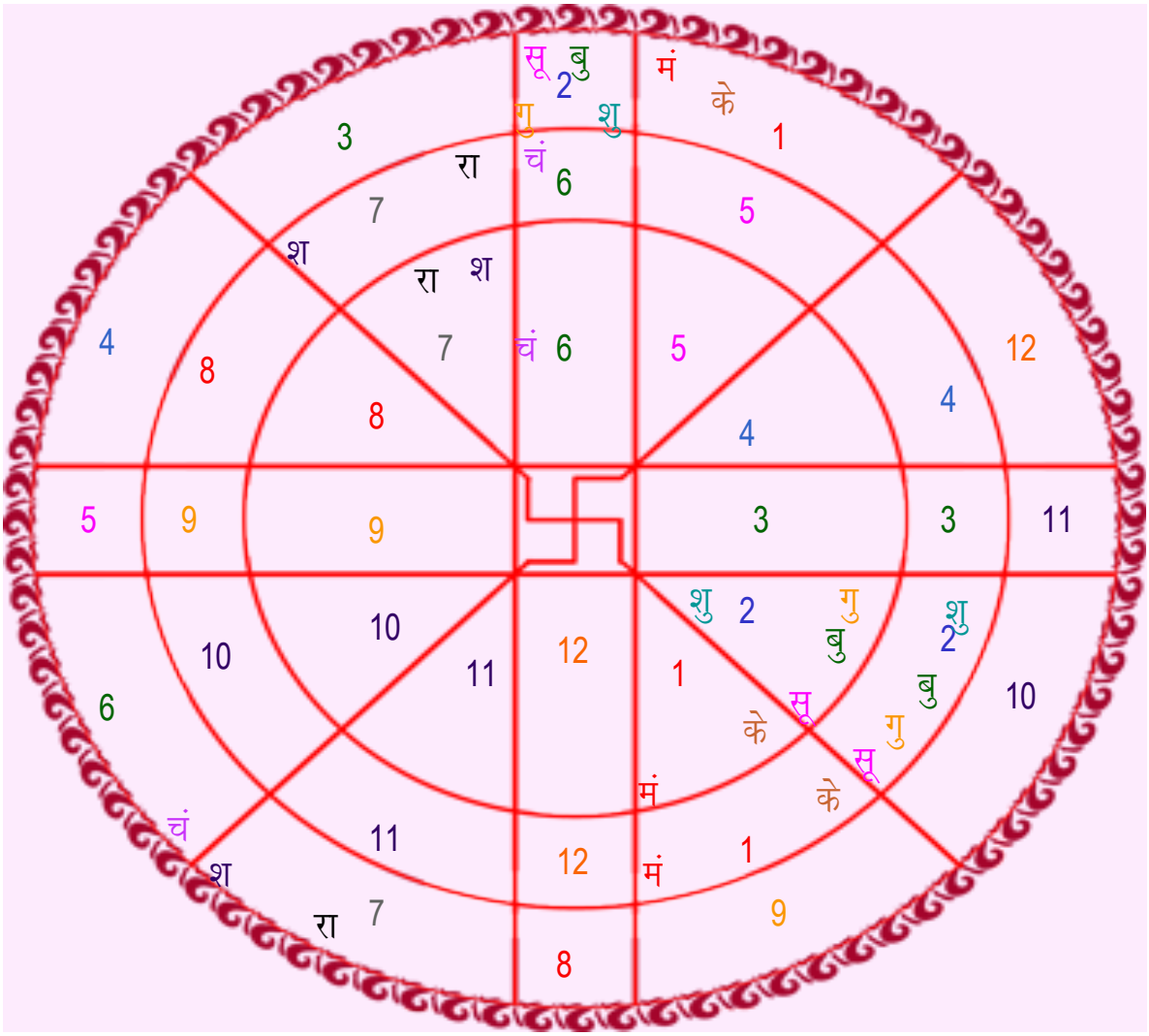

नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : सूर्य 3 वर्ष 8 मास 21 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		वृष	05:29:10	शु	सू	बु	के
चंद्र		कंया	01:43:22	बु	सू	गु	श
मंग		मेष	28:00:20	मं	सू	चं	बु
बुध		वृष	15:37:34	शु	चं	गु	रा
गुरु		वृष	27:36:37	शु	मं	गु	मं
शुक्र		वृष	19:10:57	शु	चं	बु	गु
शनि	व	तुला	12:33:37	शु	रा	बु	बु
राहु		तुला	22:45:52	शु	गु	श	शु
केतु		मेष	22:45:52	मं	शु	श	शु
हर्ष		मीन	17:10:00	गु	बु	बु	शु
नेप		कुंभ	11:14:22	श	रा	श	शु
प्लू	व	धनु	17:12:00	गु	शु	चं	शु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कंया	15:57:30	बु	चं	श	श
2	तुला	14:59:49	शु	रा	के	श
3	वृश्चि	15:14:22	मं	श	गु	श
4	धनु	15:57:58	गु	शु	सू	श
5	मक	16:58:13	श	चं	श	चं
6	कुंभ	17:29:27	श	रा	सू	चं
7	मीन	15:57:30	गु	श	गु	शु
8	मेष	14:59:49	मं	शु	शु	श
9	वृष	15:14:22	शु	चं	गु	चं
10	मिथु	15:57:58	बु	रा	शु	मं
11	कर्क	16:58:13	चं	बु	बु	के
12	सिंह	17:29:27	सू	शु	मं	रा

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:02:50

लग्न कुंडली

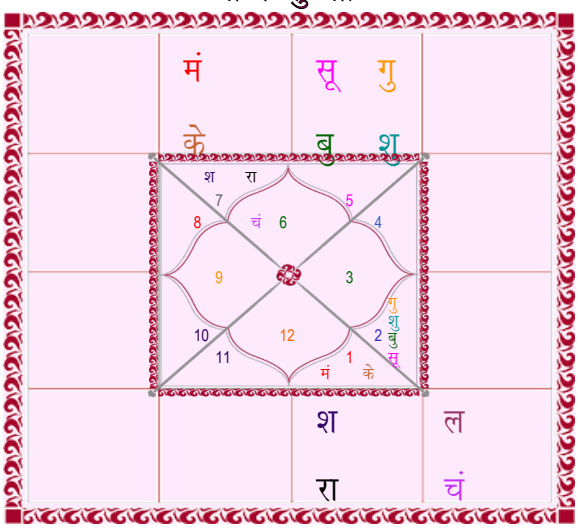

भाव कुंडली

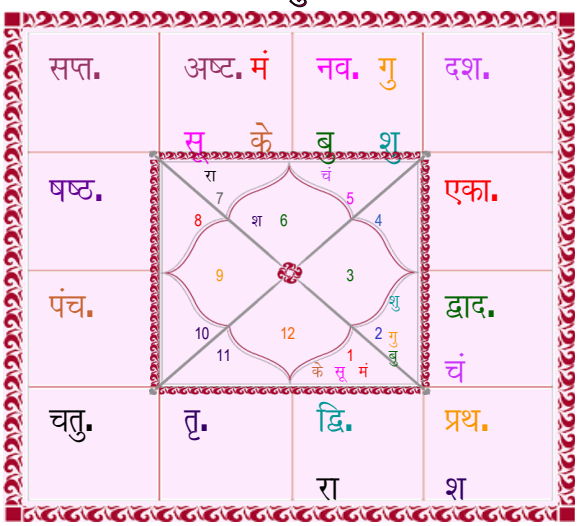

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह				
1	बु–	श			
2	शु–	श	रा	के–	
3	मं–	गु–			
4	गु–	रा–			
5	श–				
6	श–				
7	गु–	रा–			
8	सू+	चं	मं+	गु+	के
9	बु	गु	शु	रा	के+
10	बु–				
11	चं–	बु–	शु–		
12	सू	चं+	मं–	बु	शु

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव				
सू	8+	12			
चं	8	11–	12+		
मं	3–	8+	12–		
बु	1–	9	10–	11–	12
गु	3–	4–	7–	8+	9
शु	2–	9	11–	12	
श	1	2	5–	6–	
रा	2	4–	7–	9	
के	2–	8	9+		

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
लग्न राशि स्वामी	बुध
राशि नक्षत्र स्वामी	सूर्य
राशि स्वामी	बुध
वार स्वामी	चन्द्र
लग्न अन्तर स्वामी	शनि
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	श	--	बु
2	श	रा	के	शु
3	--	--	गु	मं
4	--	--	रा	गु
5	--	--	--	श
6	--	--	--	श
7	--	--	रा	गु
8	सू चं मं गु	सू मं के	गु	मं
9	रा के	बु गु शु	के	शु
10	--	--	--	बु
11	--	--	बु शु	चं
12	बु शु	चं	सू चं मं	सू

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	12	---	वृष	8
चंद्र	11	1,5,9	कन्या	12
मंग	3,8	---	मेष	8
बुध	1,10	11	वृष	9
गुरु	4,7	---	वृष	9
शुक्र	2,9	4,8,12	वृष	9
शनि	5,6	3,7	तुला	1
राहु	---	2,6,10	तुला	2
केतु	---	---	मेष	8

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	12	---	8	1,10	11	9
चंद्र	12	---	8	4,7	---	9
मंग	12	---	8	11	1,5,9	12
बुध	11	1,5,9	12	4,7	---	9
गुरु	3,8	---	8	4,7	---	9
शुक्र	11	1,5,9	12	1,10	11	9
शनि	---	2,6,10	2	1,10	11	9
राहु	4,7	---	9	5,6	3,7	1
केतु	2,9	4,8,12	9	5,6	3,7	1

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

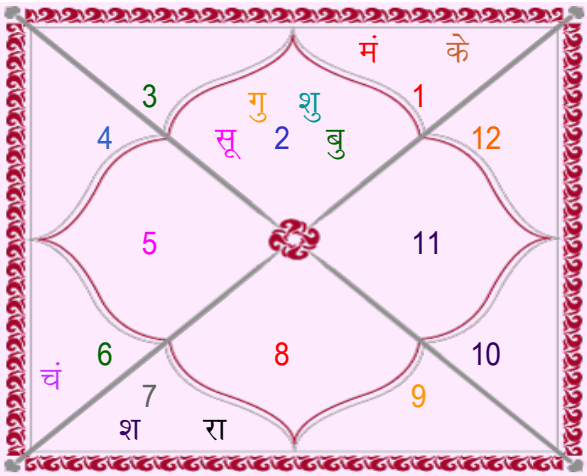

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

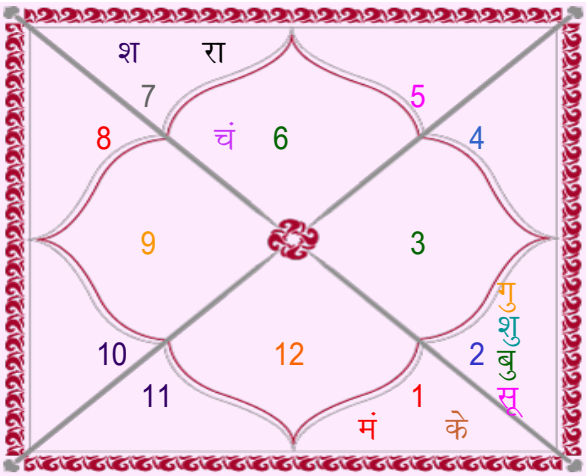

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

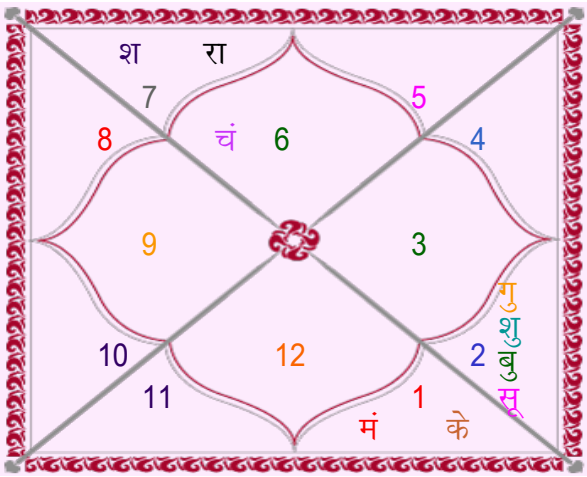

देह विचारः

होरा कुंडली

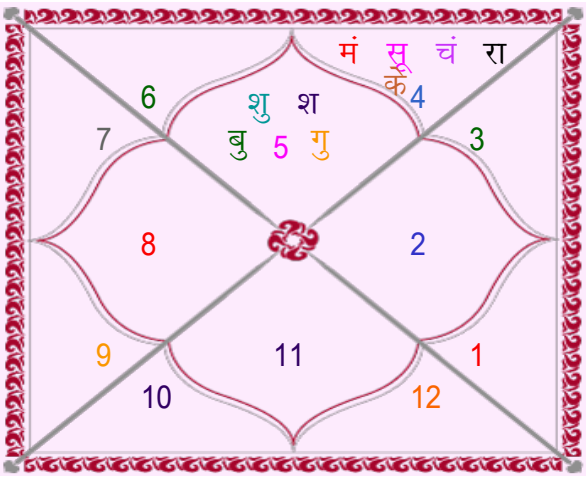

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

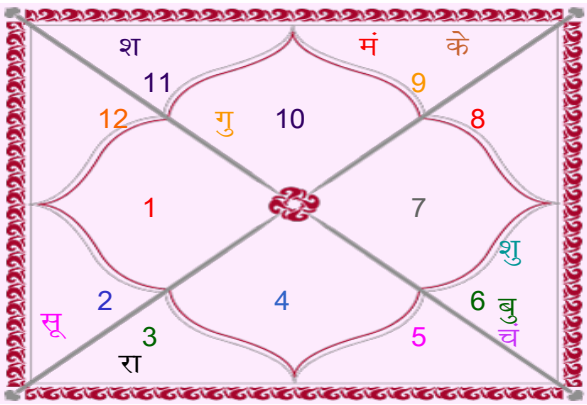

चतुर्थांश कुंडली

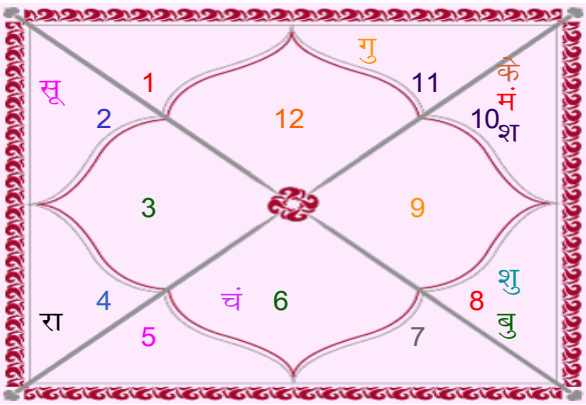

भ्रातृसौख्यम
पंचमांश कुंडली

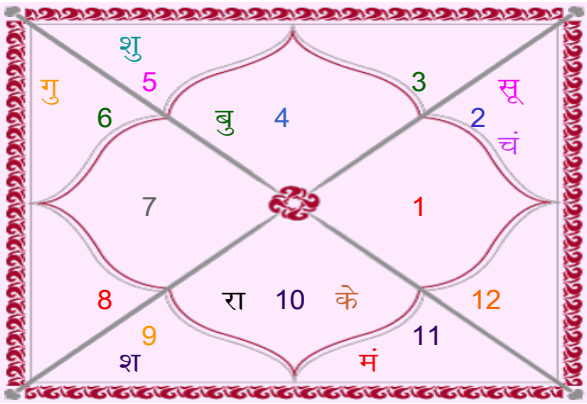

भाग्यविचारः
षष्ठांश कुंडली

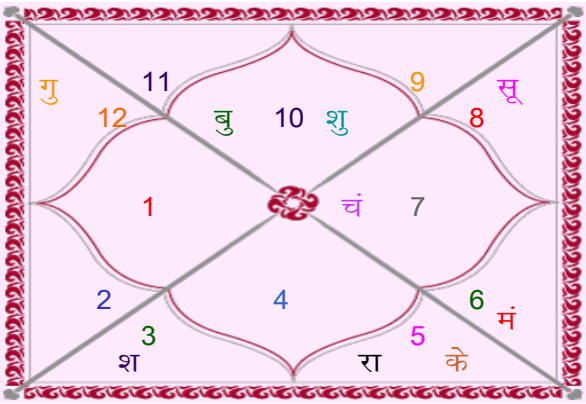

ज्ञानविचारः
सप्तमांश कुंडली

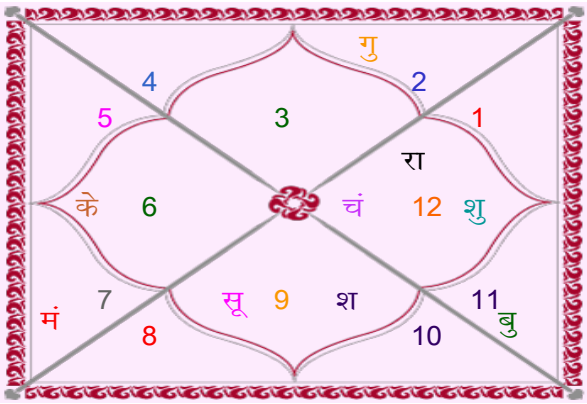

रिपुज्ञानम्
अष्टमांश कुंडली

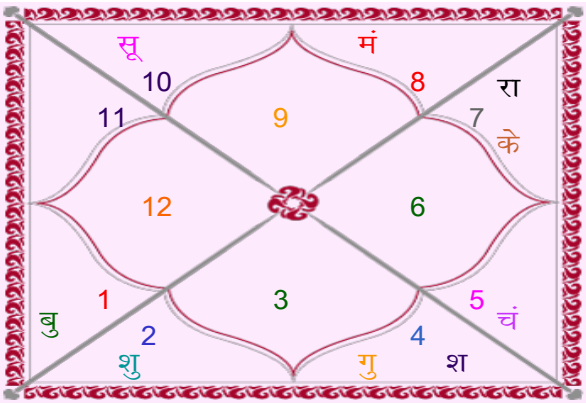

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

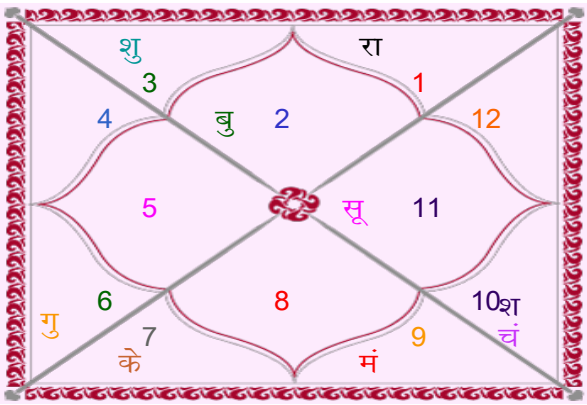

दशमांश कुंडली

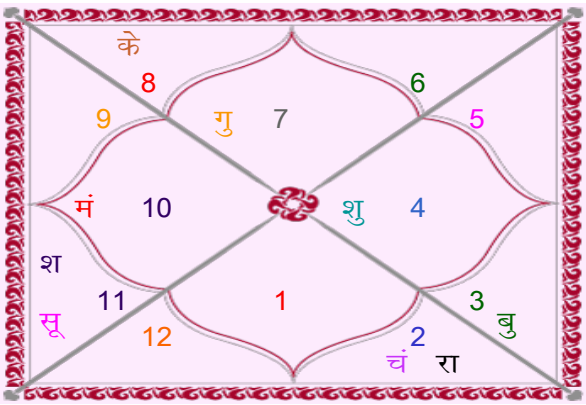

कलत्र सौख्यम
एकादशांश कुंडली

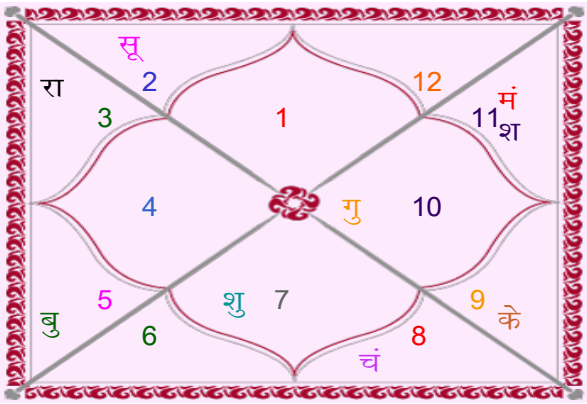

राज्यविचारः
द्वादशांश कुंडली

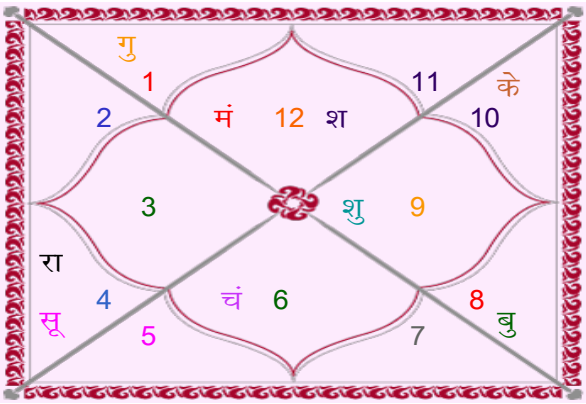

लाभविचारः
षोडशांश कुंडली

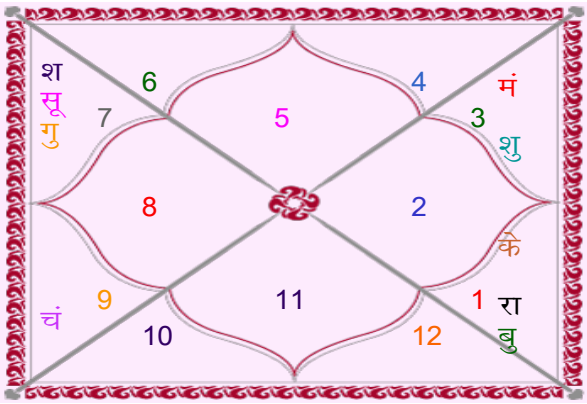

पितृसौख्यम
विंशांश कुंडली

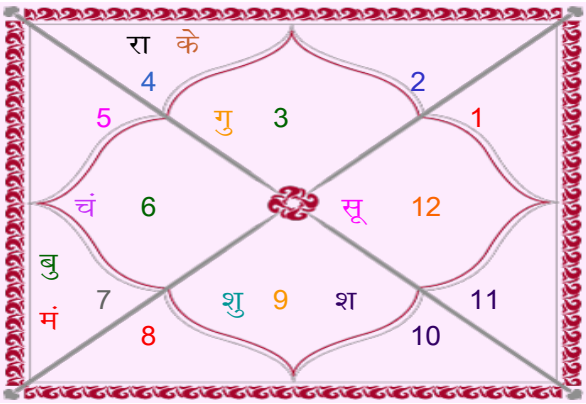

वाहनसुखविचारः

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

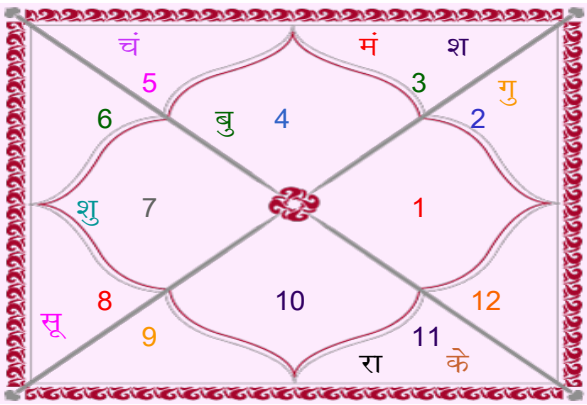

सप्तविंशांश कुंडली

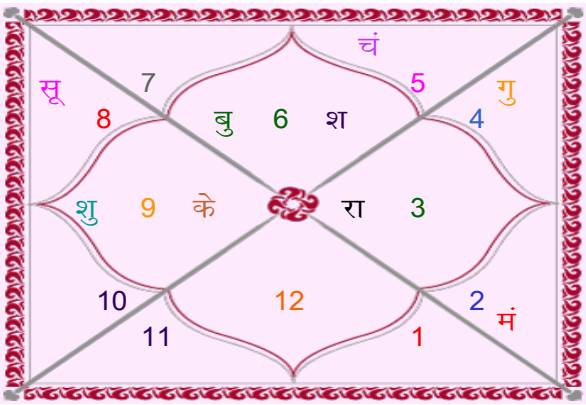

विद्याविचारः
त्रिंशांश कुंडली

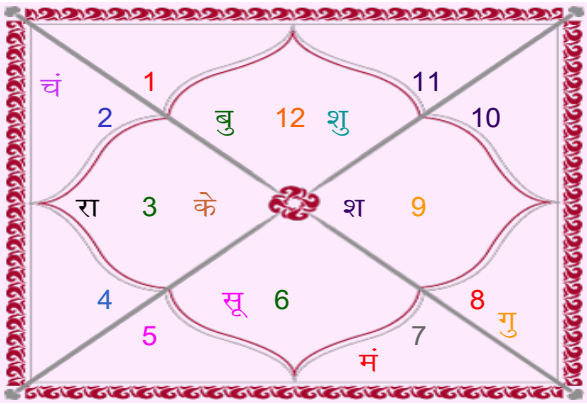

बलाबलज्ञानम्
खवेदांश कुंडली

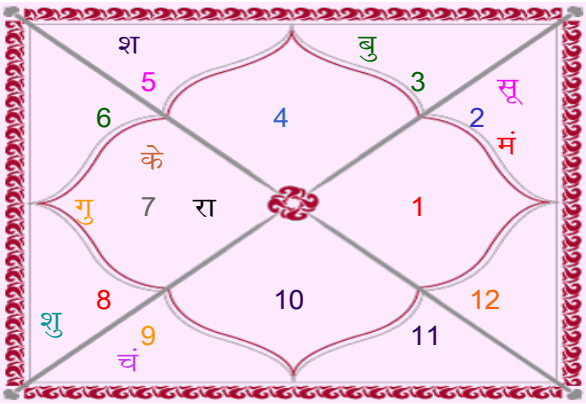

अरिष्टज्ञानम्
अक्षवेदांश कुंडली

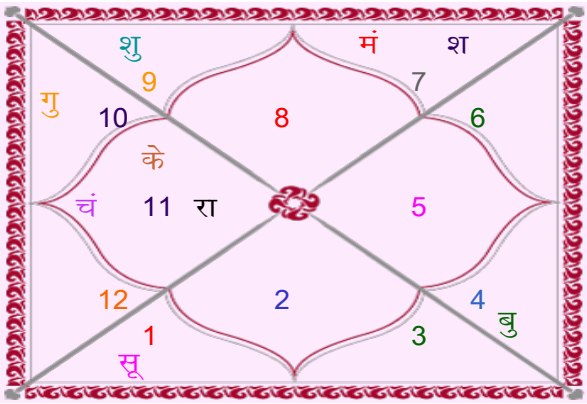

शुभाशुभज्ञानम्
षष्ट्यंश कुंडली

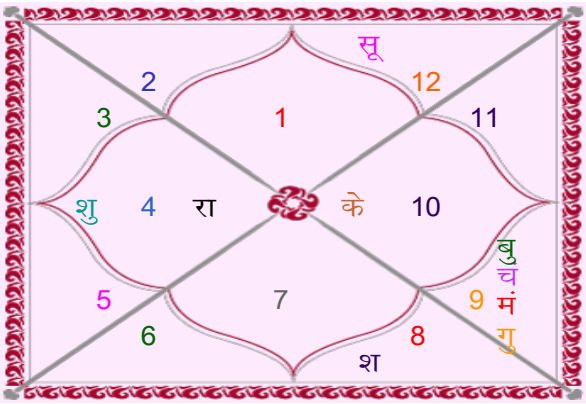

सर्वास्थितिविचारः

सर्वास्थितिविचारः

Sample

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	कंया	वृष	कंया	मेष	वृष	वृष	वृष	तुला	तुला	मेष
होरा	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	मक	वृष	कंया	धनु	कंया	मक	कंया	कुंभ	मिथु	धनु
चतुर्थांश	मीन	वृष	कंया	मक	वृश्चि	कुंभ	वृश्चि	मक	कर्क	मक
सप्तमांश	मिथु	धनु	मीन	तुला	कुंभ	वृष	मीन	धनु	मीन	कंया
नवमांश	वृष	कुंभ	मक	धनु	वृष	कंया	मिथु	मक	मेष	तुला
दशमांश	तुला	कुंभ	वृष	मक	मिथु	तुला	कर्क	कुंभ	वृष	वृश्चि
द्वादशांश	मीन	कर्क	कंया	मीन	वृश्चि	मेष	धनु	मीन	कर्क	मक
षोडशांश	सिंह	तुला	धनु	मिथु	मेष	तुला	मिथु	तुला	मेष	मेष
विंशांश	मिथु	मीन	कंया	तुला	तुला	मिथु	धनु	धनु	कर्क	कर्क
चतुर्विंशांश	कर्क	वृश्चि	सिंह	मिथु	कर्क	वृष	तुला	मिथु	कुंभ	कुंभ
सप्तविंशांश	कंया	वृश्चि	सिंह	वृष	कंया	कर्क	धनु	कंया	मिथु	धनु
त्रिंशांश	मीन	कंया	वृष	तुला	मीन	वृश्चि	मीन	धनु	मिथु	मिथु
खवेदांश	कर्क	वृष	धनु	वृष	मिथु	तुला	वृश्चि	सिंह	तुला	तुला
अक्षवेदांश	वृश्चि	मेष	कुंभ	तुला	कर्क	मक	धनु	तुला	कुंभ	कुंभ
षष्ट्यंश	मेष	मीन	धनु	धनु	धनु	धनु	कर्क	वृश्चि	कर्क	मक

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	---	---	---	---
चन्द्र	किंसुक	किंसुक	उत्तम	कुसुम
मंगल	---	---	पारिजात	कुसुम
बुध	---	---	पारिजात	नागपुष्प
गुरु	---	---	---	भेदक
शुक्र	किंसुक	व्यंजन	उत्तम	नागपुष्प
शनि	व्यंजन	व्यंजन	सिंहान	कल्पवृक्ष
राहु	किंसुक	किंसुक	पारिजात	कुसुम
केतु	---	---	---	भेदक

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	6.10	12.10	17.65	12.35	7.85	12.05	13.55	8.00	12.25
सप्तवर्ग	6.73	11.60	17.18	11.48	7.75	11.18	12.43	7.90	12.43
दशवर्ग	7.53	9.48	15.83	11.05	11.23	8.83	9.95	8.58	9.73
षोडशवर्ग	7.70	10.10	15.88	10.93	9.55	10.35	10.75	8.30	10.28

Sample

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंग	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
मंग	मित्र	शत्रु	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
बुध	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
शुक्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु
राहु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु
केतु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	शत्रु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम
चंद्र	सम	---	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	अधिशत्रु
मंग	अतिमित्र	सम	---	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	सम
बुध	सम	अधिशत्रु	मित्र	---	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	सम	सम	अतिमित्र	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
शुक्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	सम	शत्रु	---	सम	सम	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम	शत्रु	सम	---	सम	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	---	अधिशत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	मित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

Sample

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	52	20	30	20	48	43	58
सप्तवर्गज बल	32	75	150	75	62	58	81
ओजयुग्मक बल	15	30	30	0	0	15	15
केन्द्र बल	15	60	30	15	15	15	30
द्रेष्काण बल	15	0	0	15	0	0	15
कुल स्थान बल	128	185	240	125	124	131	198
कुल दिग्बल	47	25	44	20	24	9	9
नतोन्नत बल	45	15	15	60	45	45	15
पक्ष बल	21	77	21	21	39	39	21
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	0	60
अब्द बल	15	0	0	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	30	0	0
वार बल	0	45	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	60	0	0
अयन बल	112	28	54	58	60	59	48
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	193	165	89	139	294	143	144
कुल चेष्टाबल	0	0	5	15	8	10	52
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-5	-3	-5	-5	-5	-5	3
कुल षट्बल	423	424	390	320	479	330	414
रूप षट्बल	7.1	7.1	6.5	5.3	8.0	5.5	6.9
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.4	1.2	1.3	0.8	1.2	1.0	1.4
संबंधित पद	1	5	3	7	4	6	2

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	50.67	28.13	12.21	17.48	19.28	20.50	54.57
कष्ट फल	9.29	29.00	40.63	42.26	25.50	29.53	4.52

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	320	330	390	479	414	414	479	390	330	320	424	423
भावदिग्बल	60	50	20	0	50	10	30	40	50	30	10	40
भावदृष्टि बल	66	31	90	78	55	66	18	-5	-5	-8	-1	66
कुल भाव बल	446	411	501	557	519	490	527	425	375	342	432	529
रूप भाव बल	7.4	6.8	8.3	9.3	8.6	8.2	8.8	7.1	6.3	5.7	7.2	8.8
संबंधित पद	7	10	5	1	4	6	3	9	11	12	8	2

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	कंया	15:57:30	--	--	हस्त	2	13
गुलिक	गु	कंया	21:43:11	--	--	हस्त	4	13
काल	का	तुला	14:14:00	--	--	स्वाति	3	15
मृत्यु	मृ	मिथु	22:05:49	--	--	पुनर्वसु	1	7
यमघंटक	यम	सिंह	06:05:02	--	--	मघा	2	10
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कर्क	13:56:47	--	--	पुष्य	4	8
धूम	धू	कंया	18:49:10	--	--	हस्त	3	13
व्यतिपात	व्य	तुला	11:10:50	--	--	स्वाति	2	15
परिवेश	परि	मेष	11:10:50	--	--	अश्विनी	4	1
इन्द्रचाप	इ	मीन	18:49:10	--	--	रेवती	1	27
उपकेतु	उप	मेष	05:29:10	--	--	अश्विनी	2	1

प्राणपद	:	धनु	17:42:40	कारकाँश लग्न	:	धनु	12:02:58
भाव लग्न	:	कुंभ	09:04:11	होरा लग्न	:	कर्क	02:10:51
घटी लग्न	:	वृष	01:02:32	वर्णद लग्न	:	धनु	18:08:21

उपग्रह कुंडली

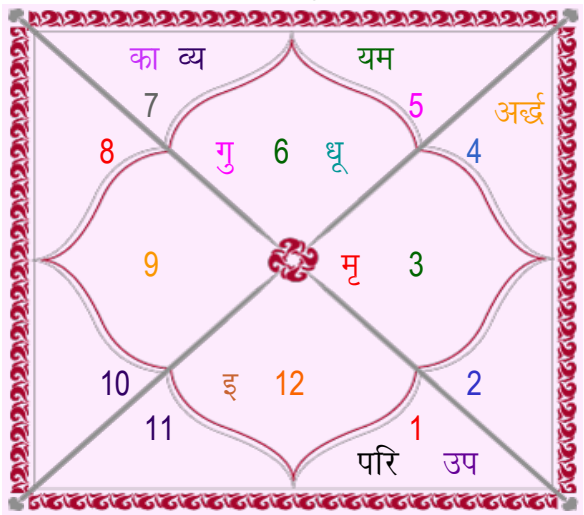

आरूढ़ कुंडली

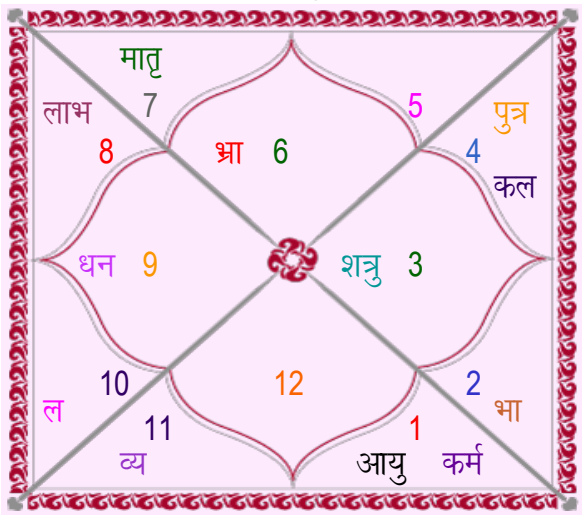

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
ल	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
सू	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
चं	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
मं	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
बु	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	7
गु	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	4
शु	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
श	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
कुल	4	3	4	5	3	2	5	6	3	5	5	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
ल	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
सू	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	6
चं	0	1	1	1	0	1	0	1	0	0	1	1	7
मं	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	6
बु	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
गु	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
शु	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	7
श	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
कुल	0	4	4	5	5	4	1	6	4	2	8	6	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
ल	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
सू	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	5
चं	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
मं	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
बु	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
गु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	4
शु	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
श	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	7
कुल	4	2	2	6	1	3	6	3	1	2	5	4	39

बुद्ध का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
ल	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	7
सू	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चं	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	6
मं	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
बु	1	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	8
गु	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
शु	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
श	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
कुल	7	4	4	6	2	4	7	2	5	5	4	4	54

गुरू का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
ल	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
सू	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	9
चं	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	5
मं	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
बु	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	8
गु	0	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	8
शु	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	6
श	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	4
कुल	1	6	5	5	3	4	5	3	4	6	7	7	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
ल	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	8
सू	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
चं	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	9
मं	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	6
बु	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
गु	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	5
शु	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	9
श	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	7
कुल	3	4	3	6	3	6	3	2	7	6	4	5	52

शनि का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
ल	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
सू	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
चं	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
मं	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	6
बु	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	6
गु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
शु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	3
श	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
कुल	3	1	3	2	3	3	3	3	4	2	6	6	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
ल	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
सू	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
चं	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	5
मं	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	5
बु	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	7
गु	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
शु	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	0	7
श	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	6
कुल	2	3	6	5	6	3	4	3	3	4	6	4	49

Sample

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
सूर्य	4	3	4	5	3	2	5	6	3	5	5	3	48
चंद्र	0	4	4	5	5	4	1	6	4	2	8	6	49
मंग	4	2	2	6	1	3	6	3	1	2	5	4	39
बुध	7	4	4	6	2	4	7	2	5	5	4	4	54
गुरु	1	6	5	5	3	4	5	3	4	6	7	7	56
शुक्र	3	4	3	6	3	6	3	2	7	6	4	5	52
शनि	3	1	3	2	3	3	3	3	4	2	6	6	39
बि	22	24	25	35	20	26	30	25	28	28	39	35	337
रे	34	32	31	21	36	30	26	31	28	28	17	21	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
सूर्य	1	1	0	2	0	0	1	3	0	3	1	0	12
चंद्र	0	2	3	0	5	2	0	1	4	0	7	1	25
मंग	3	0	0	3	0	1	4	0	0	0	3	1	15
बुध	5	0	0	4	0	0	3	0	3	1	0	2	18
गुरु	0	2	0	2	2	0	0	0	3	2	2	4	17
शुक्र	0	0	0	4	0	2	0	0	4	2	1	3	16
शनि	0	0	0	0	0	2	0	1	1	1	3	4	12
रे	9	5	3	15	7	7	8	5	15	9	17	15	115

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
सूर्य	1	1	0	2	0	0	1	2	0	2	1	0	10
चंद्र	0	2	1	0	5	2	0	1	3	0	7	1	22
मंग	3	0	0	3	0	1	4	0	0	0	3	1	15
बुध	5	0	0	4	0	0	3	0	1	1	0	2	16
गुरु	0	2	0	2	2	0	0	0	3	0	0	1	10
शुक्र	0	0	0	4	0	2	0	0	1	1	1	3	12
शनि	0	0	0	0	0	2	0	1	1	1	2	3	10
रे	9	5	1	15	7	7	8	4	9	5	14	11	95

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	69	212	111	110	87	87	90
ग्रह पिंड	40	64	49	55	54	10	10
शोध्य पिंड	109	276	160	165	141	97	100

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 3 वर्ष 8 मास 21 दिन

सूर्य
20/05/2013
09/02/2017

सूर्य	00/00/0000
चंद्र	00/00/0000
मंग	00/00/0000
राहु	20/05/2013
गुरु	16/12/2013
शनि	28/11/2014
बुध	04/10/2015
केतु	09/02/2016
शुक्र	09/02/2017

चंद्र
09/02/2017
09/02/2027

चंद्र	10/12/2017
मंग	11/07/2018
राहु	10/01/2020
गुरु	11/05/2021
शनि	10/12/2022
बुध	11/05/2024
केतु	10/12/2024
शुक्र	10/08/2026
सूर्य	09/02/2027

मंग
09/02/2027
09/02/2034

मंग	08/07/2027
राहु	26/07/2028
गुरु	02/07/2029
शनि	10/08/2030
बुध	08/08/2031
केतु	04/01/2032
शुक्र	05/03/2033
सूर्य	11/07/2033
चंद्र	09/02/2034

राहु
09/02/2034
09/02/2052

राहु	22/10/2036
गुरु	18/03/2039
शनि	22/01/2042
बुध	10/08/2044
केतु	28/08/2045
शुक्र	28/08/2048
सूर्य	23/07/2049
चंद्र	22/01/2051
मंग	09/02/2052

गुरु
09/02/2052
09/02/2068

गुरु	30/03/2054
शनि	10/10/2056
बुध	16/01/2059
केतु	23/12/2059
शुक्र	23/08/2062
सूर्य	11/06/2063
चंद्र	10/10/2064
मंग	16/09/2065
राहु	09/02/2068

शनि
09/02/2068
09/02/2087

शनि	12/02/2071
बुध	22/10/2073
केतु	01/12/2074
शुक्र	31/01/2078
सूर्य	13/01/2079
चंद्र	13/08/2080
मंग	22/09/2081
राहु	29/07/2084
गुरु	09/02/2087

बुध
09/02/2087
10/02/2104

बुध	08/07/2089
केतु	05/07/2090
शुक्र	05/05/2093
सूर्य	11/03/2094
चंद्र	11/08/2095
मंग	07/08/2096
राहु	24/02/2099
गुरु	02/06/2101
शनि	10/02/2104

केतु
10/02/2104
10/02/2111

केतु	08/07/2104
शुक्र	08/09/2105
सूर्य	13/01/2106
चंद्र	14/08/2106
मंग	11/01/2107
राहु	29/01/2108
गुरु	04/01/2109
शनि	13/02/2110
बुध	10/02/2111

शुक्र
10/02/2111
10/02/2131

शुक्र	12/06/2114
सूर्य	12/06/2115
चंद्र	10/02/2117
मंग	12/04/2118
राहु	11/04/2121
गुरु	11/12/2123
शनि	10/02/2127
बुध	11/12/2129
केतु	10/02/2131

सूर्य
10/02/2131
00/00/0000

सूर्य	31/05/2131
चंद्र	29/11/2131
मंग	05/04/2132
राहु	28/02/2133
गुरु	21/05/2133
शनि	00/00/0000
बुध	00/00/0000
केतु	00/00/0000
शुक्र	00/00/0000

– उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 3 वर्ष 8 मा 21 दि होता है।
– उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा-प्रत्यन्तर

सूर्य-गुरु
20/05/2013
16/12/2013

गुरु	20/05/2013
शनि	23/05/2013
बुध	03/07/2013
केतु	20/07/2013
शुक्र	07/09/2013
सूर्य	22/09/2013
चंद्र	16/10/2013
मंग	02/11/2013
राहु	16/12/2013

सूर्य-शनि
16/12/2013
28/11/2014

शनि	09/02/2014
बुध	30/03/2014
केतु	19/04/2014
शुक्र	16/06/2014
सूर्य	04/07/2014
चंद्र	01/08/2014
मंग	22/08/2014
राहु	13/10/2014
गुरु	28/11/2014

सूर्य-बुध
28/11/2014
04/10/2015

बुध	11/01/2015
केतु	29/01/2015
शुक्र	22/03/2015
सूर्य	06/04/2015
चंद्र	02/05/2015
मंग	20/05/2015
राहु	06/07/2015
गुरु	16/08/2015
शनि	04/10/2015

सूर्य-केतु
04/10/2015
09/02/2016

केतु	12/10/2015
शुक्र	02/11/2015
सूर्य	09/11/2015
चंद्र	19/11/2015
मंग	27/11/2015
राहु	16/12/2015
गुरु	02/01/2016
शनि	22/01/2016
बुध	09/02/2016

सूर्य-शुक्र
09/02/2016
09/02/2017

शुक्र	10/04/2016
सूर्य	28/04/2016
चंद्र	29/05/2016
मंग	19/06/2016
राहु	13/08/2016
गुरु	01/10/2016
शनि	28/11/2016
बुध	18/01/2017
केतु	09/02/2017

चंद्र-चंद्र
09/02/2017
10/12/2017

चंद्र	06/03/2017
मंग	24/03/2017
राहु	08/05/2017
गुरु	18/06/2017
शनि	05/08/2017
बुध	17/09/2017
केतु	05/10/2017
शुक्र	25/11/2017
सूर्य	10/12/2017

चंद्र-मंग
10/12/2017
11/07/2018

मंग	22/12/2017
राहु	23/01/2018
गुरु	21/02/2018
शनि	26/03/2018
बुध	26/04/2018
केतु	08/05/2018
शुक्र	13/06/2018
सूर्य	23/06/2018
चंद्र	11/07/2018

चंद्र-राहु
11/07/2018
10/01/2020

राहु	01/10/2018
गुरु	13/12/2018
शनि	10/03/2019
बुध	27/05/2019
केतु	28/06/2019
शुक्र	27/09/2019
सूर्य	24/10/2019
चंद्र	09/12/2019
मंग	10/01/2020

चंद्र-गुरु
10/01/2020
11/05/2021

गुरु	15/03/2020
शनि	31/05/2020
बुध	08/08/2020
केतु	05/09/2020
शुक्र	25/11/2020
सूर्य	20/12/2020
चंद्र	29/01/2021
मंग	27/02/2021
राहु	11/05/2021

चंद्र-शनि
11/05/2021
10/12/2022

शनि	10/08/2021
बुध	31/10/2021
केतु	04/12/2021
शुक्र	10/03/2022
सूर्य	08/04/2022
चंद्र	27/05/2022
मंग	29/06/2022
राहु	24/09/2022
गुरु	10/12/2022

चंद्र-बुध
10/12/2022
11/05/2024

बुध	21/02/2023
केतु	24/03/2023
शुक्र	18/06/2023
सूर्य	14/07/2023
चंद्र	26/08/2023
मंग	25/09/2023
राहु	12/12/2023
गुरु	19/02/2024
शनि	11/05/2024

चंद्र-केतु
11/05/2024
10/12/2024

केतु	23/05/2024
शुक्र	28/06/2024
सूर्य	08/07/2024
चंद्र	26/07/2024
मंग	07/08/2024
राहु	08/09/2024
गुरु	07/10/2024
शनि	10/11/2024
बुध	10/12/2024

चंद्र-शुक्र
10/12/2024
10/08/2026

शुक्र	21/03/2025
सूर्य	21/04/2025
चंद्र	10/06/2025
मंग	16/07/2025
राहु	15/10/2025
गुरु	04/01/2026
शनि	11/04/2026
बुध	06/07/2026
केतु	10/08/2026

चंद्र-सूर्य
10/08/2026
09/02/2027

सूर्य	20/08/2026
चंद्र	04/09/2026
मंग	14/09/2026
राहु	12/10/2026
गुरु	05/11/2026
शनि	04/12/2026
बुध	30/12/2026
केतु	10/01/2027
शुक्र	09/02/2027

मंग-मंग
09/02/2027
08/07/2027

मंग	18/02/2027
राहु	12/03/2027
गुरु	01/04/2027
शनि	25/04/2027
बुध	16/05/2027
केतु	24/05/2027
शुक्र	18/06/2027
सूर्य	26/06/2027
चंद्र	08/07/2027

मंग-राहु
08/07/2027
26/07/2028

राहु	04/09/2027
गुरु	25/10/2027
शनि	25/12/2027
बुध	17/02/2028
केतु	10/03/2028
शुक्र	13/05/2028
सूर्य	01/06/2028
चंद्र	03/07/2028
मंग	26/07/2028

विंशोत्तरी दशा-प्रत्यन्तर

मंग-गुरु		मंग-शनि		मंग-बुध		मंग-केतु	
26/07/2028		02/07/2029		10/08/2030		08/08/2031	
02/07/2029		10/08/2030		08/08/2031		04/01/2032	
गुरु	09/09/2028	शनि	04/09/2029	बुध	01/10/2030	केतु	16/08/2031
शनि	02/11/2028	बुध	31/10/2029	केतु	22/10/2030	शुक्र	10/09/2031
बुध	20/12/2028	केतु	24/11/2029	शुक्र	21/12/2030	सूर्य	18/09/2031
केतु	09/01/2029	शुक्र	30/01/2030	सूर्य	08/01/2031	चंद्र	30/09/2031
शुक्र	07/03/2029	सूर्य	19/02/2030	चंद्र	08/02/2031	मंग	09/10/2031
सूर्य	24/03/2029	चंद्र	25/03/2030	मंग	01/03/2031	राहु	31/10/2031
चंद्र	22/04/2029	मंग	18/04/2030	राहु	24/04/2031	गुरु	20/11/2031
मंग	11/05/2029	राहु	17/06/2030	गुरु	11/06/2031	शनि	14/12/2031
राहु	02/07/2029	गुरु	10/08/2030	शनि	08/08/2031	बुध	04/01/2032

मंग-शुक्र		मंग-सूर्य		मंग-चंद्र		राहु-राहु	
04/01/2032		05/03/2033		11/07/2033		09/02/2034	
05/03/2033		11/07/2033		09/02/2034		22/10/2036	
शुक्र	15/03/2032	सूर्य	11/03/2033	चंद्र	29/07/2033	राहु	07/07/2034
सूर्य	05/04/2032	चंद्र	22/03/2033	मंग	10/08/2033	गुरु	15/11/2034
चंद्र	11/05/2032	मंग	29/03/2033	राहु	11/09/2033	शनि	20/04/2035
मंग	04/06/2032	राहु	18/04/2033	गुरु	09/10/2033	बुध	07/09/2035
राहु	07/08/2032	गुरु	05/05/2033	शनि	12/11/2033	केतु	04/11/2035
गुरु	03/10/2032	शनि	25/05/2033	बुध	12/12/2033	शुक्र	16/04/2036
शनि	10/12/2032	बुध	12/06/2033	केतु	25/12/2033	सूर्य	04/06/2036
बुध	08/02/2033	केतु	19/06/2033	शुक्र	29/01/2034	चंद्र	25/08/2036
केतु	05/03/2033	शुक्र	11/07/2033	सूर्य	09/02/2034	मंग	22/10/2036

राहु-गुरु		राहु-शनि		राहु-बुध		राहु-केतु	
22/10/2036		18/03/2039		22/01/2042		10/08/2044	
18/03/2039		22/01/2042		10/08/2044		28/08/2045	
गुरु	16/02/2037	शनि	29/08/2039	बुध	03/06/2042	केतु	01/09/2044
शनि	05/07/2037	बुध	24/01/2040	केतु	27/07/2042	शुक्र	04/11/2044
बुध	06/11/2037	केतु	25/03/2040	शुक्र	29/12/2042	सूर्य	23/11/2044
केतु	27/12/2037	शुक्र	14/09/2040	सूर्य	14/02/2043	चंद्र	25/12/2044
शुक्र	22/05/2038	सूर्य	05/11/2040	चंद्र	02/05/2043	मंग	17/01/2045
सूर्य	05/07/2038	चंद्र	31/01/2041	मंग	26/06/2043	राहु	15/03/2045
चंद्र	16/09/2038	मंग	02/04/2041	राहु	12/11/2043	गुरु	05/05/2045
मंग	06/11/2038	राहु	05/09/2041	गुरु	15/03/2044	शनि	05/07/2045
राहु	18/03/2039	गुरु	22/01/2042	शनि	10/08/2044	बुध	28/08/2045

राहु-शुक्र		राहु-सूर्य		राहु-चंद्र		राहु-मंग	
28/08/2045		28/08/2048		23/07/2049		22/01/2051	
28/08/2048		23/07/2049		22/01/2051		09/02/2052	
शुक्र	27/02/2046	सूर्य	14/09/2048	चंद्र	07/09/2049	मंग	13/02/2051
सूर्य	23/04/2046	चंद्र	11/10/2048	मंग	09/10/2049	राहु	12/04/2051
चंद्र	23/07/2046	मंग	30/10/2048	राहु	30/12/2049	गुरु	02/06/2051
मंग	25/09/2046	राहु	19/12/2048	गुरु	13/03/2050	शनि	02/08/2051
राहु	08/03/2047	गुरु	31/01/2049	शनि	08/06/2050	बुध	25/09/2051
गुरु	02/08/2047	शनि	24/03/2049	बुध	24/08/2050	केतु	17/10/2051
शनि	22/01/2048	बुध	10/05/2049	केतु	25/09/2050	शुक्र	20/12/2051
बुध	25/06/2048	केतु	29/05/2049	शुक्र	25/12/2050	सूर्य	08/01/2052
केतु	28/08/2048	शुक्र	23/07/2049	सूर्य	22/01/2051	चंद्र	09/02/2052

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 9 वर्ष 3 मास 22 दिन

केतु
20/05/2013
11/09/2022

केतु	00/00/0000
चंद्र	20/05/2013
बुध	26/11/2013
शुक्र	25/03/2016
सूर्य	26/08/2017
मंग	16/03/2019
गुरु	19/11/2020
शनि	11/09/2022

चंद्र
11/09/2022
11/09/2038

चंद्र	25/11/2024
बुध	01/04/2027
शुक्र	24/09/2029
सूर्य	01/04/2031
मंग	25/11/2032
गुरु	11/09/2034
शनि	17/08/2036
केतु	11/09/2038

बुध
11/09/2038
11/09/2055

बुध	09/03/2041
शुक्र	29/10/2043
सूर्य	09/06/2045
मंग	13/03/2047
गुरु	06/02/2049
शनि	25/02/2051
केतु	08/05/2053
चंद्र	11/09/2055

शुक्र
11/09/2055
11/09/2073

शुक्र	28/06/2058
सूर्य	12/03/2060
मंग	21/01/2062
गुरु	28/01/2064
शनि	01/04/2066
केतु	29/07/2068
चंद्र	21/01/2071
बुध	11/09/2073

सूर्य
11/09/2073
11/09/2084

सूर्य	27/09/2074
मंग	17/11/2075
गुरु	09/02/2077
शनि	09/06/2078
केतु	10/11/2079
चंद्र	17/05/2081
बुध	27/12/2082
शुक्र	11/09/2084

मंग
11/09/2084
11/09/2096

मंग	08/12/2085
गुरु	13/04/2087
शनि	23/09/2088
केतु	13/04/2090
चंद्र	09/12/2091
बुध	11/09/2093
शुक्र	23/07/2095
सूर्य	11/09/2096

गुरु
11/09/2096
12/09/2109

गुरु	25/02/2098
शनि	21/09/2099
केतु	28/05/2101
चंद्र	14/03/2103
बुध	07/02/2105
शुक्र	14/02/2107
सूर्य	09/05/2108
मंग	12/09/2109

शनि
12/09/2109
12/09/2123

शनि	22/05/2111
केतु	13/03/2113
चंद्र	17/02/2115
बुध	07/03/2117
शुक्र	10/05/2119
सूर्य	05/09/2120
मंग	16/02/2122
गुरु	12/09/2123

केतु
12/09/2123
00/00/0000

केतु	21/08/2125
चंद्र	16/09/2127
बुध	21/05/2129
शुक्र	00/00/0000
सूर्य	00/00/0000
मंग	00/00/0000
गुरु	00/00/0000
शनि	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 2 वर्ष 5 मास 24 दिन

सूर्य
20/05/2013
13/11/2015

सूर्य	00/00/0000
चंद्र	00/00/0000
मंग	00/00/0000
राहु	20/05/2013
गुरु	07/10/2013
शनि	26/05/2014
बुध	19/12/2014
केतु	15/03/2015
शुक्र	13/11/2015

चंद्र
13/11/2015
14/07/2022

चंद्र	03/06/2016
मंग	23/10/2016
राहु	23/10/2017
गुरु	13/09/2018
शनि	04/10/2019
बुध	12/09/2020
केतु	02/02/2021
शुक्र	14/03/2022
सूर्य	14/07/2022

मंग
14/07/2022
15/03/2027

मंग	22/10/2022
राहु	04/07/2023
गुरु	16/02/2024
शनि	12/11/2024
बुध	12/07/2025
केतु	19/10/2025
शुक्र	30/07/2026
सूर्य	24/10/2026
चंद्र	15/03/2027

राहु
15/03/2027
15/03/2039

राहु	31/12/2028
गुरु	07/08/2030
शनि	01/07/2032
बुध	14/03/2034
केतु	25/11/2034
शुक्र	25/11/2036
सूर्य	02/07/2037
चंद्र	02/07/2038
मंग	15/03/2039

गुरु
15/03/2039
13/11/2049

गुरु	15/08/2040
शनि	24/04/2042
बुध	28/10/2043
केतु	11/06/2044
शुक्र	22/03/2046
सूर्य	03/10/2046
चंद्र	24/08/2047
मंग	07/04/2048
राहु	13/11/2049

शनि
13/11/2049
14/07/2062

शनि	15/11/2051
बुध	01/09/2053
केतु	28/05/2054
शुक्र	08/07/2056
सूर्य	24/02/2057
चंद्र	16/03/2058
मंग	11/12/2058
राहु	04/11/2060
गुरु	14/07/2062

बुध
14/07/2062
13/11/2073

बुध	21/02/2064
केतु	19/10/2064
शुक्र	09/09/2066
सूर्य	04/04/2067
चंद्र	14/03/2068
मंग	10/11/2068
राहु	24/07/2070
गुरु	27/01/2072
शनि	13/11/2073

केतु
13/11/2073
14/07/2078

केतु	20/02/2074
शुक्र	01/12/2074
सूर्य	24/02/2075
चंद्र	16/07/2075
मंग	24/10/2075
राहु	05/07/2076
गुरु	18/02/2077
शनि	15/11/2077
बुध	14/07/2078

शुक्र
14/07/2078
13/11/2091

शुक्र	03/10/2080
सूर्य	03/06/2081
चंद्र	14/07/2082
मंग	24/04/2083
राहु	24/04/2085
गुरु	02/02/2087
शनि	14/03/2089
बुध	02/02/2091
केतु	13/11/2091

सूर्य
13/11/2091
00/00/0000

सूर्य	25/01/2092
चंद्र	26/05/2092
मंग	19/08/2092
राहु	26/03/2093
गुरु	20/05/2093
शनि	00/00/0000
बुध	00/00/0000
केतु	00/00/0000
शुक्र	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चंद्र 3 वर्ष 1 मास 7 दिन

चंद्र
20/05/2013
27/06/2016

चंद्र	00/00/0000
मंग	00/00/0000
बुध	00/00/0000
शनि	00/00/0000
गुरु	00/00/0000
राहु	20/05/2013
शुक्र	27/08/2015
सूर्य	27/06/2016

मंग
27/06/2016
27/06/2024

मंग	29/01/2017
बुध	04/05/2018
शनि	30/01/2019
गुरु	27/06/2020
राहु	17/05/2021
शुक्र	07/12/2022
सूर्य	18/05/2023
चंद्र	27/06/2024

बुध
27/06/2024
27/06/2041

बुध	01/03/2027
शनि	26/09/2028
गुरु	24/09/2031
राहु	13/08/2033
शुक्र	03/12/2036
सूर्य	13/11/2037
चंद्र	24/03/2040
मंग	27/06/2041

शनि
27/06/2041
28/06/2051

शनि	31/05/2042
गुरु	04/03/2044
राहु	14/04/2045
शुक्र	25/03/2047
सूर्य	14/10/2047
चंद्र	04/03/2049
मंग	30/11/2049
बुध	28/06/2051

गुरु
28/06/2051
27/06/2070

गुरु	30/10/2054
राहु	10/12/2056
शुक्र	20/08/2060
सूर्य	09/09/2061
चंद्र	30/04/2064
मंग	26/09/2065
बुध	23/09/2068
शनि	27/06/2070

राहु
27/06/2070
27/06/2082

राहु	27/10/2071
शुक्र	26/02/2074
सूर्य	27/10/2074
चंद्र	27/06/2076
मंग	17/05/2077
बुध	07/04/2079
शनि	17/05/2080
गुरु	27/06/2082

शुक्र
27/06/2082
29/06/2103

शुक्र	28/07/2086
सूर्य	27/09/2087
चंद्र	27/08/2090
मंग	17/03/2092
बुध	08/07/2095
शनि	17/06/2097
गुरु	26/02/2101
राहु	29/06/2103

सूर्य
29/06/2103
28/06/2109

सूर्य	28/10/2103
चंद्र	28/08/2104
मंग	06/02/2105
बुध	17/01/2106
शनि	08/08/2106
गुरु	28/08/2107
राहु	28/04/2108
शुक्र	28/06/2109

चंद्र
28/06/2109
00/00/0000

चंद्र	29/07/2111
मंग	07/09/2112
बुध	17/01/2115
शनि	08/06/2116
गुरु	27/01/2119
राहु	27/09/2120
शुक्र	21/05/2121
सूर्य	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

योगिनी दशा-प्रत्यन्तर

सिद्ध-संक
20/05/2013
24/08/2013

संक	00/00/0000
मंग	00/00/0000
पिंग	00/00/0000
धांय	00/00/0000
भ्राम	00/00/0000
भद्रि	00/00/0000
उल्क	20/05/2013
सिद्ध	24/08/2013

सिद्ध-मंग
24/08/2013
03/11/2013

मंग	26/08/2013
पिंग	30/08/2013
धांय	05/09/2013
भ्राम	13/09/2013
भद्रि	22/09/2013
उल्क	04/10/2013
सिद्ध	18/10/2013
संक	03/11/2013

सिद्ध-पिंग
03/11/2013
25/03/2014

पिंग	11/11/2013
धांय	23/11/2013
भ्राम	08/12/2013
भद्रि	28/12/2013
उल्क	21/01/2014
सिद्ध	17/02/2014
संक	21/03/2014
मंग	25/03/2014

सिद्ध-धांय
25/03/2014
24/10/2014

धांय	12/04/2014
भ्राम	05/05/2014
भद्रि	04/06/2014
उल्क	09/07/2014
सिद्ध	20/08/2014
संक	06/10/2014
मंग	12/10/2014
पिंग	24/10/2014

सिद्ध-भ्राम
24/10/2014
04/08/2015

भ्राम	25/11/2014
भद्रि	03/01/2015
उल्क	19/02/2015
सिद्ध	16/04/2015
संक	18/06/2015
मंग	26/06/2015
पिंग	11/07/2015
धांय	04/08/2015

सिद्ध-भद्रि
04/08/2015
24/07/2016

भद्रि	22/09/2015
उल्क	21/11/2015
सिद्ध	29/01/2016
संक	17/04/2016
मंग	26/04/2016
पिंग	16/05/2016
धांय	15/06/2016
भ्राम	24/07/2016

सिद्ध-उल्क
24/07/2016
23/09/2017

उल्क	03/10/2016
सिद्ध	25/12/2016
संक	30/03/2017
मंग	11/04/2017
पिंग	04/05/2017
धांय	09/06/2017
भ्राम	26/07/2017
भद्रि	23/09/2017

संक-संक
23/09/2017
05/07/2019

संक	15/02/2018
मंग	05/03/2018
पिंग	10/04/2018
धांय	03/06/2018
भ्राम	14/08/2018
भद्रि	12/11/2018
उल्क	28/02/2019
सिद्ध	05/07/2019

संक-मंग
05/07/2019
24/09/2019

मंग	07/07/2019
पिंग	11/07/2019
धांय	18/07/2019
भ्राम	27/07/2019
भद्रि	07/08/2019
उल्क	21/08/2019
सिद्ध	06/09/2019
संक	24/09/2019

संक-पिंग
24/09/2019
04/03/2020

पिंग	03/10/2019
धांय	16/10/2019
भ्राम	03/11/2019
भद्रि	26/11/2019
उल्क	23/12/2019
सिद्ध	24/01/2020
संक	29/02/2020
मंग	04/03/2020

संक-धांय
04/03/2020
03/11/2020

धांय	24/03/2020
भ्राम	20/04/2020
भद्रि	24/05/2020
उल्क	04/07/2020
सिद्ध	20/08/2020
संक	13/10/2020
मंग	20/10/2020
पिंग	03/11/2020

संक-भ्राम
03/11/2020
23/09/2021

भ्राम	09/12/2020
भद्रि	23/01/2021
उल्क	18/03/2021
सिद्ध	20/05/2021
संक	31/07/2021
मंग	09/08/2021
पिंग	27/08/2021
धांय	23/09/2021

संक-भद्रि
23/09/2021
03/11/2022

भद्रि	19/11/2021
उल्क	25/01/2022
सिद्ध	14/04/2022
संक	13/07/2022
मंग	25/07/2022
पिंग	16/08/2022
धांय	19/09/2022
भ्राम	03/11/2022

संक-उल्क
03/11/2022
04/03/2024

उल्क	23/01/2023
सिद्ध	28/04/2023
संक	14/08/2023
मंग	28/08/2023
पिंग	24/09/2023
धांय	03/11/2023
भ्राम	28/12/2023
भद्रि	04/03/2024

संक-सिद्ध
04/03/2024
23/09/2025

सिद्ध	23/06/2024
संक	27/10/2024
मंग	12/11/2024
पिंग	13/12/2024
धांय	30/01/2025
भ्राम	03/04/2025
भद्रि	21/06/2025
उल्क	23/09/2025

मंग-मंग
23/09/2025
03/10/2025

मंग	24/09/2025
पिंग	24/09/2025
धांय	25/09/2025
भ्राम	26/09/2025
भद्रि	28/09/2025
उल्क	29/09/2025
सिद्ध	01/10/2025
संक	03/10/2025

योगिनी दशा-प्रत्यन्तर

मंग-पिंग
03/10/2025
24/10/2025

पिंग	05/10/2025
धांय	06/10/2025
भ्राम	09/10/2025
भद्रि	11/10/2025
उल्क	15/10/2025
सिद्ध	19/10/2025
संक	23/10/2025
मंग	24/10/2025

मंग-धांय
24/10/2025
23/11/2025

धांय	26/10/2025
भ्राम	30/10/2025
भद्रि	03/11/2025
उल्क	08/11/2025
सिद्ध	14/11/2025
संक	21/11/2025
मंग	21/11/2025
पिंग	23/11/2025

मंग-भ्राम
23/11/2025
03/01/2026

भ्राम	28/11/2025
भद्रि	03/12/2025
उल्क	10/12/2025
सिद्ध	18/12/2025
संक	27/12/2025
मंग	28/12/2025
पिंग	30/12/2025
धांय	03/01/2026

मंग-भद्रि
03/01/2026
22/02/2026

भद्रि	10/01/2026
उल्क	18/01/2026
सिद्ध	28/01/2026
संक	08/02/2026
मंग	10/02/2026
पिंग	13/02/2026
धांय	17/02/2026
भ्राम	22/02/2026

मंग-उल्क
22/02/2026
24/04/2026

उल्क	05/03/2026
सिद्ध	16/03/2026
संक	30/03/2026
मंग	01/04/2026
पिंग	04/04/2026
धांय	09/04/2026
भ्राम	16/04/2026
भद्रि	24/04/2026

मंग-सिद्ध
24/04/2026
04/07/2026

सिद्ध	08/05/2026
संक	24/05/2026
मंग	26/05/2026
पिंग	30/05/2026
धांय	05/06/2026
भ्राम	13/06/2026
भद्रि	23/06/2026
उल्क	04/07/2026

मंग-संक
04/07/2026
24/09/2026

संक	22/07/2026
मंग	25/07/2026
पिंग	29/07/2026
धांय	05/08/2026
भ्राम	14/08/2026
भद्रि	25/08/2026
उल्क	08/09/2026
सिद्ध	24/09/2026

पिंग-पिंग
24/09/2026
03/11/2026

पिंग	26/09/2026
धांय	29/09/2026
भ्राम	04/10/2026
भद्रि	09/10/2026
उल्क	16/10/2026
सिद्ध	24/10/2026
संक	02/11/2026
मंग	03/11/2026

पिंग-धांय
03/11/2026
03/01/2027

धांय	08/11/2026
भ्राम	15/11/2026
भद्रि	23/11/2026
उल्क	04/12/2026
सिद्ध	15/12/2026
संक	29/12/2026
मंग	31/12/2026
पिंग	03/01/2027

पिंग-भ्राम
03/01/2027
25/03/2027

भ्राम	12/01/2027
भद्रि	23/01/2027
उल्क	06/02/2027
सिद्ध	22/02/2027
संक	12/03/2027
मंग	14/03/2027
पिंग	18/03/2027
धांय	25/03/2027

पिंग-भद्रि
25/03/2027
05/07/2027

भद्रि	08/04/2027
उल्क	25/04/2027
सिद्ध	15/05/2027
संक	06/06/2027
मंग	09/06/2027
पिंग	15/06/2027
धांय	23/06/2027
भ्राम	05/07/2027

पिंग-उल्क
05/07/2027
03/11/2027

उल्क	25/07/2027
सिद्ध	18/08/2027
संक	14/09/2027
मंग	17/09/2027
पिंग	24/09/2027
धांय	04/10/2027
भ्राम	17/10/2027
भद्रि	03/11/2027

पिंग-सिद्ध
03/11/2027
24/03/2028

सिद्ध	01/12/2027
संक	02/01/2028
मंग	06/01/2028
पिंग	13/01/2028
धांय	25/01/2028
भ्राम	10/02/2028
भद्रि	01/03/2028
उल्क	24/03/2028

पिंग-संक
24/03/2028
03/09/2028

संक	30/04/2028
मंग	04/05/2028
पिंग	13/05/2028
धांय	27/05/2028
भ्राम	14/06/2028
भद्रि	06/07/2028
उल्क	02/08/2028
सिद्ध	03/09/2028

पिंग-मंग
03/09/2028
23/09/2028

मंग	03/09/2028
पिंग	04/09/2028
धांय	06/09/2028
भ्राम	08/09/2028
भद्रि	11/09/2028
उल्क	15/09/2028
सिद्ध	19/09/2028
संक	23/09/2028

धांय-धांय
23/09/2028
23/12/2028

धांय	01/10/2028
भ्राम	11/10/2028
भद्रि	23/10/2028
उल्क	08/11/2028
सिद्ध	25/11/2028
संक	16/12/2028
मंग	18/12/2028
पिंग	23/12/2028

चर दशा

भोग्य दशा काल : कंया 4 वर्ष 0 मास 0 दिन

कंया
20/05/2013
20/05/2017

तुला	19/09/2013
वृश्चि	19/01/2014
धनु	20/05/2014
मक	19/09/2014
कुंभ	19/01/2015
मीन	21/05/2015
मेष	19/09/2015
वृष	19/01/2016
मिथु	20/05/2016
कर्क	19/09/2016
सिंह	18/01/2017
कंया	20/05/2017

तुला
20/05/2017
20/05/2024

वृश्चि	19/12/2017
धनु	20/07/2018
मक	18/02/2019
कुंभ	19/09/2019
मीन	19/04/2020
मेष	19/11/2020
वृष	20/06/2021
मिथु	19/01/2022
कर्क	20/08/2022
सिंह	21/03/2023
कंया	20/10/2023
तुला	20/05/2024

वृश्चि
20/05/2024
20/05/2029

तुला	19/10/2024
कंया	20/03/2025
सिंह	19/08/2025
कर्क	19/01/2026
मिथु	20/06/2026
वृष	19/11/2026
मेष	20/04/2027
मीन	19/09/2027
कुंभ	19/02/2028
मक	20/07/2028
धनु	19/12/2028
वृश्चि	20/05/2029

धनु
20/05/2029
20/05/2034

वृश्चि	19/10/2029
तुला	21/03/2030
कंया	20/08/2030
सिंह	19/01/2031
कर्क	20/06/2031
मिथु	19/11/2031
वृष	19/04/2032
मेष	19/09/2032
मीन	18/02/2033
कुंभ	20/07/2033
मक	19/12/2033
धनु	20/05/2034

मक
20/05/2034
20/05/2037

धनु	20/08/2034
वृश्चि	19/11/2034
तुला	18/02/2035
कंया	21/05/2035
सिंह	20/08/2035
कर्क	19/11/2035
मिथु	19/02/2036
वृष	20/05/2036
मेष	19/08/2036
मीन	19/11/2036
कुंभ	18/02/2037
मक	20/05/2037

कुंभ
20/05/2037
20/05/2041

मीन	19/09/2037
मेष	19/01/2038
वृष	20/05/2038
मिथु	19/09/2038
कर्क	19/01/2039
सिंह	21/05/2039
कंया	19/09/2039
तुला	19/01/2040
वृश्चि	20/05/2040
धनु	19/09/2040
मक	18/01/2041
कुंभ	20/05/2041

मीन
20/05/2041
21/05/2051

मेष	21/03/2042
वृष	19/01/2043
मिथु	19/11/2043
कर्क	19/09/2044
सिंह	20/07/2045
कंया	20/05/2046
तुला	21/03/2047
वृश्चि	19/01/2048
धनु	19/11/2048
मक	19/09/2049
कुंभ	20/07/2050
मीन	21/05/2051

मेष
21/05/2051
21/05/2063

वृष	20/05/2052
मिथु	20/05/2053
कर्क	20/05/2054
सिंह	21/05/2055
कंया	20/05/2056
तुला	20/05/2057
वृश्चि	20/05/2058
धनु	21/05/2059
मक	20/05/2060
कुंभ	20/05/2061
मीन	20/05/2062
मेष	21/05/2063

वृष
21/05/2063
21/05/2075

मेष	20/05/2064
मीन	20/05/2065
कुंभ	20/05/2066
मक	21/05/2067
धनु	20/05/2068
वृश्चि	20/05/2069
तुला	20/05/2070
कंया	21/05/2071
सिंह	20/05/2072
कर्क	20/05/2073
मिथु	20/05/2074
वृष	21/05/2075

मिथु
21/05/2075
20/05/2086

वृष	19/04/2076
मेष	20/03/2077
मीन	18/02/2078
कुंभ	19/01/2079
मक	20/12/2079
धनु	19/11/2080
वृश्चि	19/10/2081
तुला	19/09/2082
कंया	20/08/2083
सिंह	20/07/2084
कर्क	20/06/2085
मिथु	20/05/2086

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

दशा विश्लेषण

महादशा :- सूर्य

(20/05/2013 - 09/02/2017)

सूर्य की महादाा 20/05/2013 को आरम्भ होगी और 6 वर्ष की होकर 09/02/2017 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य नवम भाव में स्थित है। सूर्य पिता, प्रतिष्ठा, सम्पत्ति, साहस, स्वास्थ्य, आनन्द और सात्विक स्वभाव का द्योतक है जबकि नवम भाव पिता, लम्बी यात्रा या तीर्थ यात्रा और उच्च शिक्षा का द्योतक है। अतः इस दशा में आपको आदर, शिक्षा तथा पिता से लाभ की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य : इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्तिशाली होंगे और आप में जीवन–शक्ति प्रचुर मात्रा में रहेगी। आपमें स्वास्थ्यलाभ की अद्‌भुत क्षमता होगी और आप किसी भी रोग से जल्द छुटकारा प्राप्त कर लेंगे। अतिशयताओं का परित्याग करें। मानसिक तथा शरीरिक विश्राम की आवश्यकता है। आपको हृदय अथवा आँखों की सम्भावित बीमारी को रोकने के लिये सन्तुलित आहर लेना चाहिए। गिरने अथवा चोट से बचना चाहिए।

अर्थ : इस दशा के दौरान आप अत्यधिक भाग्यशाली होंगे। आपको सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपको पिता से लाभ होगा अथवा पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आप स्वयं भी नौकरी अथवा व्यवसाय से धनोपार्जन करेंगे। आप स्वभाव से उदार हैं, किन्तु, आपको व्यय के प्रति सावधान रहना चाहिए। तथाकथित मित्रों से आपकी हानि हो सकती है। किन्तु इस महादशा में आपको सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय : इस दशा के दौरान आप भाग्यशाली होंगे। आपको आपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। आप एक जन्मजात नेता हैं और संगठनों, निगमों तथा अन्य सरकारी एजेसियों के प्रधान का कार्य अति सुन्दर ढंग से सम्पादित कर सकते हैं। आपको शक्तिशाली तथा आधिकारिक पद की प्राप्ति होगी। सैन्य तथा राजनीतिक कार्यों में आपकी रुचि होगी और आप उनमें अच्छा कर सकते हैं। प्रशासकीय कार्य, तकनीकी तथा विज्ञान सम्बन्धी सेवाएँ भी आपके अनुकूल होंगी। आपके छोटे भाई–बहनों को साझेदारी, यात्राओं तथा विदेश से लाभ मिलेगा। बड़े भाई–बहनों को सभी प्रकार के लाभ, प्रतिष्ठा, सम्पत्ति तथा मित्रों की प्राप्ति होगी। उनके साथ आपके सम्बन्ध उत्तम होंगे।

शिक्षा : आपकी शैक्षणिक योग्यता अति उत्तम होगी और आपको खेलों में आपको सफलता तथा ख्याति मिलेगी। शरीर विज्ञान आपके अनुकूल होगा।

गुप्त विद्या में आपकी रुचि होगी अथवा आप चिकित्सा का क्षेत्र भी अपना सकते हैं।

परामर्श : अतिरिक्त लाभ के लिये भगवान शिव की पूजा करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- चन्द्र

(09/02/2017 - 09/02/2027)

आपकी कुण्डली में चन्द्र की महादशा 09/02/2017 को आरम्भ तथा 09/02/2027 समाप्त होगी। इसकी अवधि दस वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र प्रथम भाव में अवस्थित है और आपके लग्न को बल प्रदान कर रहा है। यह आपकी शारीरिक संरचना, गठन, जीवन–शक्ति, ऊर्जस्विता, समृद्धि लम्बी आयु आदि का प्रतिनिधित्व करता है। संक्षेप में दस वर्ष की इस अवधि में आपको संतोष के साथ–साथ शांति और समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपकी समृद्धि अत्यंत सुदृढ़ होगी। यह अवधि गतिविधि से परिपूर्ण होगी।

स्वास्थ्य : चन्द्र लग्न में अवस्थित है जो केन्द्र और त्रिकोण दोनों है। यह स्थिति सुखी और स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करती है। इस दशा में कोई घातक रोग अथवा दुर्घटना नहीं होगी। आप स्वयं को शक्तिशाली अनुभव करेंगे और अपने दैनिक कार्यों का उपयुक्त ढंग से सम्पादन करने में समर्थ होंगे। आप सुन्दर हैं और अत्यन्त भावुक, कुतूहली, व्यग्र तथा बेचैन हैं।

धन सम्पत्ति : आपका मस्तिष्क तथा बुद्धि अधिक धनोपार्जन की दिशा में प्रवृत्त हैं क्योंकि दशेश चन्द्र मस्तिष्क का कारक है। आप अपनी धन–सम्पत्ति की वृद्धि करेंगे। आपके बैंक बैलेन्स तथा अन्य सम्पत्तियों में वृद्धि की सम्भावना भी है।

व्यवसाय : चन्द्र दशा के दौरान आप अपनी स्थिति तथा कार्य से संतुष्ट होंगे। यदि आप सेवारत हैं तो आपकी उन्नति के आसार हैं और व्यवसायी हैं तो व्यवसाय के विस्तार तथा नये कार्य के संकेत हैं। आपके मस्तिष्क में नये रचनात्मक विचार उभरेंगे जिनकी आपके सहकर्मी तथा उच्चाधिकारी सराहना करेंगे। चन्द्र दशा के कारण आपके व्यवसाय में आपकी स्थिति सुदृढ़ होगी और न्यायप्रियता तथा उच्चे आचरण के लिए आप प्रसिद्ध होंगे। आप ऐसे व्यवसाय का चयन भी करेंगे जिसमें उतार–चढ़ाव हो। आप अधिकार के इच्छुक होंगे। आप एक सतर्क व्यक्ति हैं।

पारिवारिक जीवन : सप्तम भाव, जो साझेदारी का भाव है, पर चन्द्र की दृष्टि होने के कारण इस काल में आपकी साझेदारी और पारिवारिक जीवन उत्तम होंगे।

आपके जीवनसाथी पूर्ण सहयोगी और सुन्दर होंगे। आपकी माता भी पारिवारिक जीवन में आपकी सहायता करेंगी और आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे। आपके पिता भी आपके

व्यवसाय में आपकी सहायता कर आपको आत्म विश्वासी बनाएंगे।
शिक्षा/प्रशिक्षण : तीस वर्ष की आयु के बाद आपका झुकाव उच्च शिक्षा की ओर होगा और आपकी धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में रुचि होगी। यदि आप अध्ययन को अपनी जीवन–वृत्ति बनाएंगे तो लेखन–पठन जारी रखेंगे और सफलता प्राप्त करेंगे।

दशा विश्लेषण

महादशा :- मंगल

(09/02/2027 - 09/02/2034)

मंगल की महादशा को 09/02/2027 आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 09/02/2034 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल अष्टम भाव में स्थित है। इसके पहले आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। आपको लाभ, इच्छाओं की पूर्ति तथा भौतिक समृद्धि की प्राप्ति हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति का लाभ और पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है तथा आपके अच्छे स्वास्थ्य की संभावना है।

स्वास्थ्य : इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आप में जीवनी शक्ति और उत्साह होगा। अपनी सभी इच्छाओं की पूर्ति के लिए आप में आवश्यक कर्मशक्ति तथा ऊर्जा होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आपका स्वास्थ्य एक सीमा तक प्रभावित हो सकता है। आँख तथा मूत्राशय संबंधी समस्याओं, सरदर्द, ज्वर आदि की सम्भावना है। कुछ घाव तथा चोट आ सकती है।

अर्थ और व्यवसाय : आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप धनोपार्जन अपने प्रयासों से करेंगे। पैतृक सम्पत्ति, तथा ट्रस्ट से आय, बोनस या अवकाश ग्रहण से लाभ की सम्भावना है। आपका बैंक बैलेंस सुदृढ़ होगा। आपको कहीं से अचानक धन की प्राप्ति होगी। जीविका के लिए सशस्त्र सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी के कार्य, लोहा–इस्पात से सम्बन्धित व्यवसाय आदि का चयन कर सकते हैं। रसायन, समुद्री उत्पाद, कुटीर उद्योग आदि का व्यापार उत्तम होगा। आप एक सफल दन्त चिकित्सक या सर्जन हो सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों की छोटी यात्राएं होंगी, उन्हें कठिन परिश्रम करना होगा और उनकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपका चिर प्रतीक्षित स्थानन्तरण या परिवर्तन होगा। व्यवसाय व्यापार से जुड़े लोगों की आय में वृद्धि होगी। हर प्रकार का लाभ प्राप्त होगा। व्यापार में उन्नति होगी और आय में वृद्धि होगी। अप्रत्याशित परिवर्तन तथा विकास की सम्भावना है जो अन्ततः लभदायक होगा। मार्केटिंग तथा जन–सम्पर्क कौशल उत्तम होगा और आप अपने क्षेत्र में बहुत अच्छा करेंगे।

वाहन, यात्रा, सम्पत्ति : गुरु की अन्तर्दशा में आपको वाहन तथा पारिवारिक सुख मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप छोटी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप लम्बी यात्राएं होंगी। मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको जमीन–जायदाद की प्राप्ति होगी। आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। सम्पत्ति की दृष्टि से यह एक उत्तम दशा है।

शिक्षा : आपकी शिक्षा में कुछ परिवर्तन हो सकता है। विज्ञान, लेखा, स्थतिकी, गणित आदि में आपकी रुचि होगी। आपका शोध की ओर झुकाव होगा और आप इस दशा के दौरान अपनी परियोजना पूरी करेंगे। आपकी खेलों तथा अन्य बाहरी गतिविधियों में रुचि होगी। उच्च शिक्षा के लिए यह दशा उत्तम है। आपका दाखिला आपकी पसन्द की संस्थाओं में होगा।

परिवार : परिवर में आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी की आय और लाभ में वृद्धि होगी। आपको आपके जीवन साथी से लाभ होगा। जीवन साथी के साथ आपका संबंध उत्तम रहेगा। आपकी माता के लिए निवेश व सट्टा लाभदायक तथा समृद्धिदायक होगा। आपके पिता का अच्छे कार्य में व्यय होगा, उनकी यात्रा होगी और साझीदारी में लाभ मिलेगा। आपके छोटे भाई–बहनों को विरोधियों पर विजय मिलेगी, कार्य स्थान में स्थिति सुधरेगी और स्वास्थ्य तथा जीवन शक्ति में सुधार होगा। आपके बड़े भाई–बहनों के कार्यों में कुछ परिवर्तन होगा। इस दशा के दौरान आप में पहलशक्ति बहुत होगी और आपका खिंचाव पर विज्ञान की ओर होगा।

अन्तर्दशा : मंगल की मुख्य दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सम्पत्ति तथा अचानक धन की प्राप्ति होगी। इसके बाद आने वाली राहु दशा के कारण कुछ समस्याएं आएंगी। गुरू आराम व सुख देगा और आपका विवाह भी हो सकता है। शनि के फलस्वरूप आपको बच्चों से सुख मिलेगा और कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न होंगी। बुध की अंतरदशा के फलस्वरूप आपको यश और ख्याति, सम्पत्ति, समृद्धि, उच्च प्रतिष्ठा तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होगी। केतु कुछ तनाव उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको आराम, विलासिता, सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी और आपकी यात्रा होगी जबकि सूर्य के कारण लम्बी यात्राएं होंगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप हर प्रकार का लाभ मिलेगा।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु

(09/02/2034 - 09/02/2052)

राहु की महादशा 09/02/2034 को आरम्भ और 09/02/2052 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु द्वितीय भाव में बुध की राशि में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि अष्टम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। आपकी यात्रा तथा व्यय और साझेदारों से लाभ होगा। राहु की इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति का लाभ, उत्तम शिक्षा और सरकार से संभावित आर्थिक लाभ मिलेगा।

स्वास्थ्य : इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्तिशाली और ऊर्जावान् होंगे। किन्तु मौसम में परिवर्तन के कारण गले का रोग, वाइरल बुखार, स्नायविक–दुर्बलता, चर्मरोग आदि मामूली रोग हो सकते हैं। कुछ सतर्कता बरत कर इनमें से कुछ से बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय : आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। आपको पैतृक सम्पत्ति और उपहार में धन की प्राप्ति होगी। सट्टे तथा निवेश में लाभ हो सकता है। जीविका तथा व्यवसाय के लिए वायुयान–संचालन, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, शिक्षण, ट्रैवेल एजेण्ट, वायुसैनिक, लेखा–कार्य, कम्प्यूटर– विज्ञान, प्रकाशन आदि के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। कपड़ा, रत्न, चमड़ा, आयात–निर्यात, कागज, टेलीफोन, इलेक्ट्रॉनिक सामान आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सफलता, पदोन्नति, उच्च सम्मान और आय में वृद्धि होगी। आपको सहकर्मियों का सहयोग और उच्चाधिकारियों की शुभकामना प्राप्त होगी। व्यापार व्यवसाय से जुड़े लोगों को उपार्जन तथा लाभ में वृद्धि, व्यापार में विस्तार और सम्पत्ति की अचानक बाढ़ आएगी। आर्थिक खुशहाली के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है और अप्रत्याशित प्रगति की सम्भावना है।

वाहन, यात्रा जायदाद : इस दशा के दौरान आपका जीवन सुखमय रहेगा। आपको वाहन की प्राप्ति होगी। जायदाद के लिये भी यह दशा उत्तम है। जमीन–जायदाद में वृद्धि की संभावना है। आपका एक आरामदायक मकान होगा। चन्द्र की महादशा में आपकी छोटी यात्रा और मंगल की महादशा में लम्बी यात्रा होगी। मामूली नुकसान से बचाव के लिये सावधानी बरतें।

शिक्षा : इस दशा के दौरान आपकी उत्तम तकनीकी शिक्षा होगी। आप परीक्षा तथा प्रतियोगिता में श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे। विज्ञान, इन्जीनियरिंग, लेखा–कार्य, वाणिज्य, लेखन,

समाचार माध्यम आदि में आपकी रुचि होगी। आप तेज हैं तथा बौद्धिक गतिविधि से सम्बन्धित सभी विषयों में अच्छा करेंगे।

परिवार : परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आप यदा–कदा परिवार से दूर रहेंगे। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवनसाथी को अचानक धन मिलेगा, हालाँकि कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या और परिवर्तन हो सकता है। आपकी माता को समृद्धि और सम्पत्ति मिलेगी तथा उनके मित्र प्रभावशाली होंगे जबकि आपके पिता को आदर, सम्पत्ति तथा विरोधियों पर विजय मिलेगी। आपके छोटे भाई–बहनों को कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी, व्यय होगा और विरोधियों तथा प्रतिद्वन्द्वियों के कारण निराशा मिलेगी। आपके बड़े भाई–बहनों को अचल सम्पत्ति, आवास में परिवर्तन तथा जीवन का सुख मिलेगा। इस दशा के दौरान आपको विभिन्न स्रोतों से धन की प्राप्ति तथा जीवन का सुख मिलेगा।

अन्तर्दशा : राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा में आपको सम्पत्ति और सुख की प्राप्ति होगी। गुरु की अंतरदशा में लाभ होगा और मामूली स्वास्थ्य समस्या होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, सफलता, सम्पत्ति आदि की प्राप्ति और यात्रा होगी। बुध की अन्तर्दशा में शिक्षा, परिवार में सुख और लाभ मिलेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, सम्पत्ति और सौभाग्य की प्राप्ति होगी जबकि उसके बाद शुरू होने वाली सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान जमीन जायदाद में वृद्धि और माता से सुख मिलेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा होगी और भाई–बहनों से सुख मिलेगा जबकि मंगल की अन्तर्दशा के दौरान व्यय, कुछ स्वास्थ्य समस्या और यात्रा होगी।

दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु

(09/02/2052 - 09/02/2068)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा को 09/02/2052 आरम्भ और 09/02/2068 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु नवम् भाव में स्थित है तथा नवम भाव विश्वास, भाग्य, अन्तर्ज्ञान, त्याग और दान, पिता, गुरु, दूर की यात्रा, उच्च शिक्षा तथा विदेश यात्रा का द्योतक है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है तथा जन्म कुण्डली में नवम् भाव में स्थित होकर प्रथम, तृतीय एवं पंचम् भाव को देख रहा है और इन भावों पर अच्छा प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्ष का यह दशा काल आपके लिए बहुत अच्छा होगा।

स्वास्थ्य : नवम भाव में स्थित होकर प्रथम भाव पर गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप आप एक स्वस्थ जीवन व्यतीत करेंगे तथा दैनिक कार्य और उत्सव का भरपूर आनन्द उठाएंगे। आपके साथ कोई बड़ी घटना या दुर्घटना नहीं होगी।

व्यवसाय : आपको नौकरी में पदोन्नति के अच्छे अवसर मिलेंगे जिससे आपकी आर्थिक तथा कार्यालयीय स्तर में वृद्धि होगी। व्यवसाय के प्रति आपके दिमाग में कुछ नवीन विचार आएंगे जिन्हें कार्यान्वित करने में आप सक्षम होंगे। आपको विदेश–गमन का अवसर मिलेगा और आप वहाँ अच्छा धनोपार्जन कर सकते हैं।

पारिवारिक जीवन : गुरु पंचम भाव को देखते हुए नवम भाव में स्थित है जिससे आपका पारिवारिक जीवन उत्साहपूर्ण तथा आनंदमय होगा। आपके जीवन साथी पूर्ण सहयोग करेंगे और बच्चे आज्ञाकारी होंगे जिनसे आपको आनंद मिलेगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण : धार्मिक स्वभाव होने के कारण आप साहित्य तथा सहयोगी विषयों का अध्ययन जारी रखेंगे। आपका झुकाव पुराणों तथा धर्मिक पुस्तकों की ओर होगा तथा अपना अधिकतर समय आप इन्हीं विषयों के अध्ययन में लगाएंगे।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि

(09/02/2068 - 09/02/2087)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि की महादशा 09/02/2068 को आरम्भ और 09/02/2087 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 19 वर्ष है।

शनि आपकी जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है और लोग बहुधा इससे डरते हैं। लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में यह विलम्ब और बाधाएं उत्पन्न करता है। फल प्राप्ति की दिशा में जातक को कठिन परिश्रम के लिये प्रेरित कर यह उसके धैर्य की परीक्षा लेता है। आपकी जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि चौथे, आठवें और ग्यारहवें भाव पर है और इन भावों के कारकत्व पर इसका प्रभाव है। द्वितीय भाव, जिसमें यह स्थित है, सम्पत्ति, लाभ, सांसारिक सुख, दायीं आँख, कल्पनाशक्ति, जिह्वा, दाँत तथा पारिवारिक सदस्यों का द्योतक है।

स्वास्थ्य : द्वितीय भाव, जो पारिवारिक सदस्यों का भाव है, में स्थित महादशा स्वामी शनि भाव को प्रबलित कर रहा है। इस दशा के दौरान आपको स्वास्थ्य की कोई गम्भीर समस्या अथवा दुर्घटना नहीं होगी और आप प्रसन्न रहेंगे।

अर्थ–सम्पत्ति : द्वितीय भाव स्थित शनि अपने भाव को प्रबलित कर रहा है। इस दशा के दौरान आपके संसाधनों और चल–अचल संपत्ति में वृद्धि होगी। आप दूसरों की सम्पत्ति का लाभ उठांएगे और अनीति का सहारा भी लेंगे।

व्यवसाय : आप नौकरीपेशा हों अथवा व्यवसायी, सम्पत्ति तथा साहस के स्वामी शनि की द्वितीय भाव में स्थिति के कारण व्यावसायिक दृष्टि से सुदृढ़ होंगे। सम्पत्ति का भाव आपको पर्याप्त धन और धनोपार्जन के स्रोत प्रदान करेगा। यदि आप नौकरीपेशा हैं तो आप की पदोन्नति के अनेक मार्ग खुलेंगे और यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो अनेक नये उद्यम आपके मस्तिष्क में उभरेंगे और आप पर्याप्त धन अर्जित करेंगे।

पारिवारिक जीवन : यह दशा आपके पारिवारिक जीवन के लिए बहुत अनुकूल नहीं है। आपके पारिवारिक जीवन में बहुत उतार–चढ़ाव आ सकते हैं। आपको पारिवारिक सुख नहीं मिलेगा क्योंकि आपका दूसरी स्त्रियों की ओर झुकाव है और आप दूसरों की सम्पत्ति हड़पना चाहेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण : शिक्षा तथा साहित्यिक वृत्ति में विकास के लिए यह दशा अनुकूल नहीं है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध

(09/02/2087 - 10/02/2104)

बुध की महादशा 09/02/2087 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 10/02/2104 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध नवम भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चला रही थी। शनि के कारण आपको जीवन का सुख और बच्चों से आनन्द मिला होगा और शिक्षा उत्तम हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपकी दूर की यात्रा तथा उच्च शिक्षा होगी और सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य : इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में शक्ति, स्फूर्ति और उत्साह रहेगा और आप हमेशा सक्रिय रहेंगे। आप खुश तथा आशावादी रहेंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण ज्वर, विषाणुजन्य संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, स्नायविक–थकावट तथा वात की हल्की शिकायत हो सकती है। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय : इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। व्यवसाय–व्यापार से उपार्जन में वृद्धि होगी। विदेश से लाभ हो सकता हैं। सट्टे से लाभ होगा, पिता से लाभ मिलेगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन–सामग्री, कम्प्यूटर या हाथ से बनी वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के जीविकोपार्जन में सफलता तथा आय में वृद्धि होगी और सहकर्मियों का अनुग्रह प्राप्त होता। आपको विदेश तथा ठेके से लाभ होगा। व्यवसाय–व्यापार से जुड़े लोगों को विरोधियों पर विजय और सभी कार्यों में सफलता मिलेगी तथा रोजगार और व्यापार में विस्तार के नये अवसर मिलेंगे। व्यापार या विदेश से कारोबार में वृद्धि होगी। अर्थ तथा व्यवसाय में स्थिरता और प्रगति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन–जायदाद : इस दशा के दौरान आपको जीवन का सुख मिलेगा और आप भाग्यशाली होंगे। शनि की अन्तर्दशा के दौरान वाहन–सुख तथा सभी प्रकार का आराम मिलेगा। जमीन–जायदाद के सभी लेन–देन लाभदायक होंगे। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा और बुध की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी जो अति उत्तम तथा लाभदायक सिद्ध होगी। आप तीर्थाटन पर जाएंगे या धर्मस्थलों की यात्रा करेंगे।

शिक्षा : इस दशा में आपकी शिक्षा अति उत्तम होगी। आप उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे और अपनी

पसन्द की संस्था में शिक्षा ग्रहण करेंगे। आप अपनी सभी परीक्षाओं और साक्षात्कारों में सफल होंगे। आप विज्ञान, गणित तथा वाणिज्य में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा विदेश में हो सकती है। लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्म पत्रकारिता, मीडिया, जन संचार आदि में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक, तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है। आपका दिमाग विवेकपूर्ण तथा विश्लेषणात्मक है और सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार : आपको बच्चों से सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी को संबंधियों से सहायता, शत्रुओं और विरोधियों पर विजय तथा सम्मान मिलेगा और उनकी यात्रा तथा प्रगति होगी। आपके पिता को यश, ख्याति तथा धन की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। आपके छोटे भाई–बहनों को साझेदारों से लाभ, यात्रा तथा व्यापार में सफलता मिलेगी जबकि बड़ों को हर प्रकार का लाभ मिलेगा, उनके मित्र प्रभावशाली होंगे और उनकी इच्छाओं की पूर्ति होगी। भाई–बहनों के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आप भाग्यशाली हैं। इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, धन तथा पिता से लाभ मिलेगा और अध्यात्म की ओर आपका झुकाव होगा।

अन्तर दशा : बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति तथा सुख मिलेगा। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में यश, ख्याति तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में जीवन–वृत्ति में उन्नति मिलेगी। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान व्यापार तथा साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि राहु की अन्तर्दशा में कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा तथा मामूली स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं जबकि शनि की अन्तर्दशा में शक्ति, अधिकार, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी।

दशा विश्लेषण

महादशा :- केतु

(10/02/2104 - 10/02/2111)

केतु की महादशा 10/02/2104 को आरम्भ और 10/02/2111 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु अष्टम भाव में है जहाँ से उसकी दृष्टि द्वितीय भाव पर है। उसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रह थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध की दशा में आपको अप्रत्याशित धन, सभी प्रकार का लाभ, जीवन में परिवर्तन तथा मामूली स्वास्थ्य समस्या हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको मामूली स्वास्थ्य समस्या, अप्रत्याशित परिवर्तन, अचानक लाभ और हानि होगी।

स्वास्थ्य : इस दशा के दौरान आपको कुछ समस्या हो सकती है। केतु के कारण आपको संक्रामक बीमारी, आँख की पीड़ा, चर्मरोग, गठिया, जननांग से संबंधित बीमारी आदि हो सकती है। कुछ सावधानी बरत कर इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय : आपको कुछ अप्रत्याशित आय हो सकती है। आपको विरासती सम्पत्ति, बोनस, ग्रैच्यूइटी और सेवा–निवृत्ति से लाभ मिल सकता है। व्यापार–व्यवसाय में अच्छा लाभ हो सकता है। सट्टे और लेन–देन में साधारण लाभ होगा। जीविका और व्यवसाय के लिए इन्जीनियरिंग, कम्प्यूटर विज्ञान, वायु सैनिक के कार्य, दवा, बौद्धिक कार्य, अनुसन्धान–कार्य आदि का चयन कर सकते हैं। किताब, कम्प्यूटर, चमड़े के सामान, रत्न, समाचार पत्र, पत्रिका आदि का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों को अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। सहकर्मी और अधीनस्थ कर्मचारी कठिनाइ उत्पन्न करेंगे। आपका मामूली परिवर्तन संभव है। व्यापार–व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। व्यापार में विस्तार हो सकता है और आपके लक्ष्य की पूर्ति होगी।

वाहन, यात्रा जायदाद : शनि की अन्तर्दशा के दौरान आपको आराम मिलेगा। आपकी एक सुन्दर गाड़ी होगी। सम्पत्ति का लेन–देन लाभदायक सिद्ध होगा। शनि की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा और शुक्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा : आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप शोध कार्यों में अच्छा करेंगे। आपको अपन स्तर बनाये रखने तथा परीक्षा और प्रतियोगिताओं में सफलता पाने के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। विज्ञान, भाषा, लेखन, मीडिया, लेखा कार्य आदि में आपकी रुचि होगी। आप बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार : परिवार के साथ आपका सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके बच्चे प्रतियोगिता, प्रतिस्पर्धा में अच्छा करेंगे और आपको उन पर गर्व होगा। आपके जीवनसाथी को यश, ख्याति और पहचान मिलेगी। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध सन्तोषजनक रहेगा। आपकी माता की जमीन–जायदाद में वृद्धि और समृद्धि तथा सफलता मिलेगी जबकि आपके पिता को सभी प्रकार का लाभ मिलेगा और मनोकामनाओं की पूर्ति होगी। आपके छोटे भाई–बहनों को सट्टे में लाभ होगा और शिक्षा उत्तम होगी जबकि बड़ों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, यात्रा और उच्च शिक्षा होगी। उनके साथ आपका संबंध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा : केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी यात्रा, व्यवसाय में वृद्धि और वाणिज्य–व्यापार में लाभ होगा। शुक्र के कारण खर्च, लम्बी यात्रा और साझेदारों से लाभ मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में सम्मान की प्राप्ति और जीवन में प्रगति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में यात्रा, सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी। मंगल के कारण स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और आय तथा समृद्धि अच्छी होगी। राहु कुछ बाधा उत्पन्न कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान बच्चों से सुख और सम्पत्ति मिलेगी जबकि शनि के कारण कुद परिवर्तन, यात्रा और जमीन–जायदाद में वृद्धि होगी। बुध की अन्तर्दशा में लाभ, मामूली स्वास्थ्य समस्या और परिवर्तन होगा।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र

(10/02/2111 - 10/02/2131)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 10/02/2111 को आरम्भ होकर 10/02/2131 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र नवम भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है, और संगीत, नाटक और आनन्द का द्योतक है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह कन्या राशि में निम्न का जबकि मीन राशि में उच्च का होता है। यह विवाह का कारक भी है। नवम भाव में स्थित होकर यह आपकी जन्म कुण्डली के तृतीय भाव को देख रहा है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् तृतीय भाव विश्वास, भाग्य, धार्मिक तथा अध्यात्मिक आस्था, ध्यान, त्याग, दान, पिता, गुरु, लम्बी यात्रा, उच्च शिक्षा, विदेश यात्रा का द्योतक है।

स्वास्थ्य : महादशा स्वामी शुक्र नवम भाव में स्थित है जिसके फल स्वरूप आपको कोई क्षति नहीं होगी तथा आप बिना किसी समस्या के एक स्वस्थ और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।

अर्थ–संपत्ति : शुक्र नवम भाव में स्थित है जिसके फलस्वरूप आपको इस दशा काल में चल तथा अचल सम्पत्ति अर्जित करने का अवसर मिलेगा। आप अपने कर्म और पिता सहित गुरु जनों के आशीर्वाद से काफी धन एकत्र कर पाएँगे।

व्यवसाय : शुक्र नवम् भाव में स्थित है जिसके फलस्वरूप आप अपने पारिवारिक व्यवसाय को जारी रखेंगे। आप भाग्यशाली हैं, आपको ख्याति मिलेगी, शिक्षा–प्रशिक्षण आपके पारिवारिक व्यवसाय को बड़े स्तर में ले जाने में सहायक होगा।

आप विदेश यात्रा कर सकते हैं।

पारिवारिक जीवन : नवम भाव में स्थित शुक्र के फलस्वरूप आपके पिता दीर्घायु और समृद्धिशाली होंगे। आपकी दान–पुण्य के कार्यों में रुचि हो सकती है। आप अपने परिवार की परंपरा का निर्वाह करते हुए धनोपार्जन करेंगे। आपके जीवन साथी आपके सहयोगी होंगे। और परिवार को एकरूपता से प्रगति के पथ पर ले जाएंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपके पदचिह्नों का अनुसरण करेंगे।

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती ह। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	4
मित्र अंक	2, 7, 8, 4
शत्रु अंक	5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृष, मिथु
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, ओपल
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

Sample

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सौंपकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है। सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

शुभ रत्न

जीवन रत्नः	पन्ना	भाग्योदय,व्यावसायिक उन्नति,स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	हीरा	भाग्योदय,धन,स्वास्थ्य
कारक रत्नः	नीलम	धन,सन्तति सुख,शत्रु व रोग मुक्ति

दशा	रत्न	क्षमता	मंत्र-जप/व्रत/दान/लाभ
सूर्य	पन्ना	77%	ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः (7000)
20/05/2013	हीरा	61%	रविवार,गेहुँ, मूंगा, केसर, रक्तचन्दन, घी
09/02/2017	नीलम	54%	भाग्योदय, कम खर्च, शत्रु व रोग मुक्ति
चन्द्र	पन्ना	72%	ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः (11000)
09/02/2017	हीरा	56%	सोमवार,चावल, शंख, कपूर, श्वेतचन्दन, दही
09/02/2027	नीलम	54%	स्वास्थ्य, धनार्जन, शत्रु व रोग मुक्ति
मंगल	पन्ना	71%	ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः (10000)
09/02/2027	हीरा	61%	मंगलवार,मल्का, केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन, घी
09/02/2034	नीलम	54%	दुर्घटना से बचाव, पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति
राहु	पन्ना	77%	ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः (18000)
09/02/2034	हीरा	68%	शनिवार,तिल, सरसों, खड़ग, कम्बल, तेल
09/02/2052	नीलम	60%	धन, पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति
गुरु	पन्ना	74%	ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः वृहस्पतये नमः (19000)
09/02/2052	हीरा	61%	गुरुवार,दाल चना, हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प, घी
09/02/2068	नीलम	57%	भाग्योदय, सुख, दम्पति
शनि	पन्ना	81%	ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः (23000)
09/02/2068	नीलम	71%	शनिवार,उड़द, कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह, तेल
09/02/2087	हीरा	68%	धन, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
बुध	पन्ना	91%	ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः (9000)
09/02/2087	हीरा	68%	बुधवार,मूँग, हाथी दाँत, कपूर, फल, घी
10/02/2104	नीलम	57%	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति, शत्रु व रोग मुक्ति
केतु	पन्ना	74%	ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः (17000)
10/02/2104	हीरा	65%	मंगलवार,तिल, सप्तधान्य, नारियल, शस्त्र, तेल
10/02/2111	नीलम	50%	दुर्घटना से बचाव, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
शुक्र	पन्ना	81%	ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः (16000)
10/02/2111	हीरा	78%	शुक्रवार,चावल, मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन, दूध
10/02/2131	नीलम	60%	भाग्योदय, धन, स्वास्थ्य

Sample

नवग्रह रत्न धारण विधि

"रत्न का पूर्ण शुभ फल पाने के लिए इसे शुक्ल पक्ष में निर्दिष्ट वार एवं समय में ही धारण करना चाहिए। निर्दिष्ट नक्षत्र में धारण करने से रत्न और भी प्रभावशाली हो जाता है। इसे निम्नलिखित तालिका में दिये गये भार या उससे अधिक भार का लेकर जो किवाया हो एवं पौना न हो जैसे 4-1/4 रत्ती आदि, उसे निर्दिष्ट धातु में इस प्रकार जड़वाएं कि रत्न नीचे से अंगुली को स्पर्श करे।

धारण करते समय अपने इष्ट देव का श्रद्धापूर्वक ध्यान करना चाहिए। तत्पश्चात अंगूठी को कच्चे दूध एवं गंगाजल में धोकर शुद्ध करना चाहिए एवं धूप दीप जलाकर संबंधित ग्रह के मंत्र का कम से कम एक माला जप करना चाहिए। फिर अंगूठी को धूप देकर निर्दिष्ट अंगुली में दाएं हाथ में धारण करना चाहिए। स्त्रियों को बाएं एवं पुरुषों को दाएं हाथ में अंगुली धारण करना चाहिए। अंगूठी धारण के पश्चात यथाशक्ति संबंधित ग्रह के पदार्थों का दान करना चाहिए।

यदि आप अन्य कोई रत्न पहले से पहने हुए हैं तो यह ध्यान रखें कि परस्पर विरोधी रत्न एकसाथ न पहनें। उपरोक्त विधि से रत्न को पहनने से रत्न के शुभ फल प्रचुर मात्रा में शीघ्र मिलते हैं।"

रत्न	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	ग्रह	नक्षत्र
माणिक्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	सूर्य	कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	चन्द्र	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मंगल	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	बुध	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	गुरु	पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद
हीरा	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	शुक्र	भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	शनि	पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद
गोमेद	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	राहु	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	केतु	अश्विनी, मघा, मूल

रत्न	मंत्र	निषेध रत्न	दान पदार्थ
माणिक्य	ऊँ घृणि सूर्याय नमः	हीरा, नीलम, गोमेद	गेहूँ,चंदन,घी,लाल वस्त्र
मोती	ऊँ सों सोमाय नमः	गोमेद	चावल,चीनी,घी,श्वेत वस्त्र
मूंगा	ऊँ अं अंगारकाय नमः	हीरा, गोमेद, नीलम	गेहूँ,ताम्र,गुड़,लाल वस्त्र
पन्ना	ऊँ बुं बुधाय नमः	---	मूंग,कांसा,हरित वस्त्र
पुखराज	ऊँ वृं वृहस्पतये नमः	हीरा, गोमेद	चने की दाल,गुड़,पीला वस्त्र
हीरा	ऊँ शुं शुक्राय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	चावल,चांदी,श्वेत वस्त्र
नीलम	ऊँ शं शनैश्चराय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	काला तिल,तेल,काला वस्त्र
गोमेद	ऊँ रां राहवे नमः	माणिक्य, मोती, मूंगा	तिल,तेल,कंबल,नीला वस्त्र
लहसुनिया	ऊँ कें केतवे नमः	---	सप्तधान्य,नारियल,धूम्र वस्त्र

Sample

शनि की ढैया एवं साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है । शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	--- --
साढेसाती द्वितीय ढैया	--- --
साढेसाती तृतीय ढैया	20/05/2013-02/11/2014
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	19/01/2017-18/01/2020
अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/10/2027-11/04/2030

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	20/08/2036-29/06/2039
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/06/2039-06/03/2041
साढेसाती तृतीय ढैया	06/03/2041-02/12/2043
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/11/2046-20/07/2049
अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/04/2057-22/05/2059

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	03/10/2065-21/08/2068
साढेसाती द्वितीय ढैया	21/08/2068-25/10/2070
साढेसाती तृतीय ढैया	25/10/2070-20/04/2073
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/08/2076-03/01/2079
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/05/2086-11/11/2088

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	व्यय
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	स्वास्थ्य
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	धन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	सुख
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना

शनि की ढैया एवं साढ़ेसाती विचार

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपमुा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उमुद की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि

के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

योग कारक

किसी भी जन्मकुंडली में ग्रह, अपने स्वामित्व तथा स्थिति के अनुसार, सकारात्मक या नकारात्मक फल देते हैं। ये ग्रह विभिन्न दशा काल में भिन्न-भिन्न प्रकार से आचरण करते हैं, जो दशा स्वामी की स्थिति तथा उससे ग्रह के संबंध पर आधारित है। सुविधा के लिए हमने ग्रह के शुभ तत्वों की संगणना प्रतिशत में की है। 50 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले ग्रहों को लाभकारक तथा उससे नीचे हानिकारक समझना चाहिए। इस सूचना को आधार बनाकर आप अपनी जन्मकुंडली में दशा के प्रभावों का अध्ययन स्वयं ही कर सकते हैं। इसी तरह इन आंकड़ों द्वारा गोचर के प्रभाव का भी अध्ययन किया जा सकता है।

योग कारक एवं मारक

लग्न के लिए	:	योग कारक	–	शुक्र, शनि, चंद्र
		मारक	–	सूर्य, मंग, गुरु
जन्मकुंडली के लिए	:	योग कारक	–	चंद्र, शुक्र, शनि
		मारक	–	मंग, केतु, गुरु

जन्मकुंडली में ग्रह बल

सूर्य	52%	भाग्योदय, कम खर्च
चन्द्र	77%	स्वास्थ्य, धनार्जन
मंगल	39%	दुर्घटना से बचाव, पराक्रम
बुध	58%	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
गुरु	47%	भाग्योदय, सुख, दम्पति
शुक्र	70%	भाग्योदय, धन
शनि	63%	धन, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
राहु	55%	धन, भाग्योदय
केतु	39%	दुर्घटना से बचाव,

दशा काल में ग्रह बल

दशा	समाप्ति	सूर्य	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	09/02/2017	88	86	50	79	86	72	37	33	25
चंद्र	09/02/2027	73	101	38	76	58	70	50	33	25
मंग	09/02/2034	57	69	82	35	54	53	50	33	82
राहु	09/02/2052	32	44	25	47	42	66	94	90	25
गुरु	09/02/2068	88	86	50	66	86	72	50	46	38
शनि	09/02/2087	32	44	25	60	42	66	94	90	25
बुध	10/02/2104	88	61	38	91	73	97	50	46	38
केतु	10/02/2111	32	44	82	47	42	66	37	33	82
शुक्र	10/02/2131	63	61	38	91	73	97	62	58	50

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

_*_*_*_*_*_*_*_*_*_*_*_*_*_*_*_*_*_*_

आपकी कुंडली में जन्म के समय मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जनित एवं रक्त विकार से आप यदा कदा कष्ट की अनुभूति करेंगी। साथ ही पति का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं उनके स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा। यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा तथा इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव भी नहीं होगा। साथ ही समय समय पर आपके सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। इसके प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व किसी वार्ता में बाधा भी आ सकती है परन्तु अन्त में आपको सफलता प्राप्त होगी। सामान्यतया सुख पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा।

आपकी कुंडली में मंगल अष्टम भाव में है अतः आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा गर्मी आदि से आपको किंचित परेशानी की अनुभूति हो सकती है। सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में भी आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा आवश्यक मात्रा में लाभार्जन भी होता रहेगा परन्तु इस में आपको अधिक परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे। वाणी में ओजस्विता का भाव भी रहेगा परन्तु धनार्जन अच्छा रहेगा। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा। पराक्रम में वृद्धि होगी जिससे आप अपने उन्नति मार्ग को प्रशस्त करने में समर्थ रहेंगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको ऐसे मांगलिक

पुरुष से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु की स्थिति होनी चाहिए। इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा ऐश्वर्य आदि से आप सुसम्पन्न होकर आनन्दपूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी। साथ ही परस्पर संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं–

1. अनंत
2. कुलिक
3. वासुकि
4 शङ्खपाल
5. पद्म
6. महापद्म
7. तक्षक
8. कर्कोटक
9. शङ्खचूड
10. घातक
11. विषधर एवं
12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु–केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु–केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब–जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु–केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

_*_

आपकी जन्मकुण्डली में कुलिक नामक काल सर्प योग विद्यमान है एवं राहु से केतु तक सभी भाव ग्रहों से पूर्ण है। फलस्वरूप जातक का वैवाहिक जीवन दुःखमय रहता है। कभी–कभी विच्छेद की नौबत तक आ जाती है। जातक अपने जीवन में अनेक स्त्रियों से संसर्ग कर अपमानित होता है। पारिवारिक सदस्यों से तनाव रहता है। मित्रगण कदम–कदम पर धोखा देते रहते हैं। इस योग के प्रभाव से माता–पिता का सुख जातक को प्राप्त नहीं

होता है। पिता की मृत्यु अल्पायु में हो जाती है। अपने कुटुम्बीजन भी समय–समय पर नुकसान पहुँचाते हैं। सामाजिक प्रतिष्ठा का अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक को रोग व्याधि ग्रसित करता रहता है और केस मुकदमों में फँसा रहता है और उपर्युक्त विषय में व्ययाधिक्य होने के कारण आर्थिक विपन्नता उत्पन्न हो जाती है। यहाँ तक कि जातक कुलीन होते हुए भी कंगाल हो जाता है। जातक को कार्यों में असफलता हासिल होती है और सन्तान सुख का अभाव रहता है। पुत्र होकर भी क्रूर, दुष्ट एवं अवज्ञा करने वाले और मन की करने वाले होते हैं। अर्थात् सन्तान पक्ष से सुख नहीं पाता है। चन्द्रमा के प्रभावित होने के कारण जातक का जीवन मानसिक रूप से अशान्त रहता है। जीवन में आगे बढ़ने के लिए संघर्ष करना पड़ता है पर सफलता संदिग्ध रहती है। जातक को भूत प्रेतों से परेशानियाँ बनी रहती हैं। इसके प्रभाव से जातक का दिमाग गर्म रहता है और निरन्तर परेशानी के कारण चिड़चिड़ा हो जाता है।

इस योग के कारण जातक के स्वास्थ्य में गिरावट एवं अपने भविष्य (वृद्धावस्था) को लेकर सदैव चिंतित रहता है। इस अवस्था में जाकर जातक कष्ट को पाता है। एक समय जातक के मन में यहां तक हो जाता है कि अपनी जीवन लीला समाप्त कर दूँ और जातक की अकारण मृत्यु हो जाती है।

लेकिन इतना सब कुछ होते हुए भी जातक व्यापार में सफलता प्राप्त करता है। जीवन में एकबार सफलता भी हांसिल होती है। यदि आप उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1.काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।

2.सर्प के वैदिक मन्त्र का जप करना चा ब्राह्मण द्वारा कराना चाहिए। विधिवत नाग की पूजोपरान्त मन्त्र का जप करें। मन्त्र है–

ऊँनमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये केच पृथिवीमनु।
ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

इस मन्त्र का 31,000 (इकतीस हजार) जप करें। परन्तु कलियुग में सवा लाख (1,25,000) जप का विधान है। जप के उपरान्त होमादि के पश्चात् सर्प को जल में प्रवाहित करें।

3.श्रीमद्भागवत के दशमस्कन्ध को षोडश अध्याय (16) में आये श्लोकों का 108 बार पाठ करें।

4.तिरुपति बालाजी के समीप कालहस्ती शिवमन्दिर में जाकर कालसर्पयोग की शान्ति का उपाय विधि विधान से एक बार करें।

5.चाँदी या अष्टधातु का नाग बनाकर शुभ मुहूर्त्त में धारण करें।

6.सर्पसूक्त का पाठ एक वर्ष तक करें।

7.रसोई घर में बैठकर भोजन करें।

8.श्रावण मास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।

9.श्रद्धापूर्वक पितरों का प्रतिवर्ष श्राद्धपक्ष में श्राद्ध करें। कम से कम 7 वर्ष तक अवश्य करें।

10.नीले वस्त्र, कम्बल, तिल, सरसों, गोमेद आदि समय–समय पर दान करें।

11.देवदारु, सरसों तथा लोहवान उबालकर सवा महीने तक स्नान करें।

12.शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनों ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।

13.शुभ मुहूर्त में नागपाश यन्त्र को अभिमन्त्रित कर धारण करें।

14.शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत आरंभ करना चाहिए। यह व्रत 18 करें।

काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीज मन्त्र की माला जपें। तदन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुश लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें।

15.हर पुष्य नक्षत्र को महादेव पर रूद्री से अभिषेक करें तथा जल, दुग्ध समर्पित करें।

16.जन्मकुण्डली के अनुसार राहु नक्षत्र के देवता, केतु नक्षत्र के देवता एवं चन्द्र नक्षत्र के देवता की अराधना तथा मन्त्रों के जप करने से लाभ मिलता है। इसमें सर्वप्रथम गणपति पूजन, संकल्प तदुपरान्त नक्षत्र देवपूजन, जप समर्पण एवं होमादि विधि विहित है। यह एकबार करें।

स्त्री जातक के लिए विशेष – अश्वत्थ (वट) के वृक्ष से नित्य 108 प्रदक्षिणा (फेरे) करें। तीन सौ दिन में जब 28,000 प्रदक्षिणा पूरी होगी तो दोष दूर होकर स्वतः ही सन्तति की प्राप्ति होगी।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें।

Sample

भाव फल

शारीरिक गठन, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आप कन्या लग्न में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा स्वभाव में चंचलता का भाव विद्यमान रहेगा। आप लज्जा एवं शील से युक्त रहेंगी अतः प्रारंभ में आप अपने आपको किसी अन्य के समक्ष प्रस्तुत करने में परेशानी की अनुभूति करेंगी परन्तु परिचय होने के बाद सभी लोगों को अपने व्यक्तित्व से प्रभावित एवं आकर्षित करने में समर्थ रहेंगी। अध्ययन के प्रति आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का अध्ययन करके आप उनका ज्ञान प्राप्त करेंगी। साथ ही आप में सदगुणों की प्रधानता रहेगी तथा सभी लोग आपके गुणों से प्रभावित रहेंगे। आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्य भाग्यबल से ही सम्पन्न होंगे तथा इनमें आपको अल्प मात्रा में ही परिश्रम करना पड़ेगा। यथोक्तम्

.ए01.ो06.

जीवन में आपकी मित्रता का क्षेत्र संकुचित रहेगा तथा सोच समझकर ही किसी को अपना मित्र बनाएंगी। आप एक विचारशील महिला होंगी तथा कलाकार, लेखक, वक्ता, मनोवैज्ञानिक या आलोचक आदि कार्यो को भी दक्षता पूर्वक सम्पन्न कर सकेंगी। आपकी बुद्धि अत्यंत ही तीव्र रहेगी तथा गूढ़ से गूढ़ तत्वों को हृदयगम करने में समर्थ रहेंगी। साथ ही भौतिक सुख संसाधनों के प्रति भी आपका तीव्र आकर्षण रहेगा तथा उनको अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आपके व्यक्तित्व की एक विशेषता यह होगी कि अपने आंतरिक भावों को गुप्त रखने में सफल रहेंगी। अतः कोई भी व्यक्ति प्रथम मुलाकात में आपके बारे में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने में असमर्थ रहेगा जिससे आपके विषय में वह कोई गलत या सही राय प्रस्तुत कर सकता है। इसके साथ ही आप स्वयं आगे बढ़कर किसी भी कार्य को करने में संकोच की अनुभूति करेंगी। इससे आपको यदा कदा हानि या परेशानी का सामना भी करना पड़ेगा।

राजनैतिक क्षेत्र में कार्य करने की आपकी रूचि कम ही रहेगी परन्तु राजनेताओं के सचिव या सलाहकार के रूप में आप दक्ष सिद्ध होंगी क्योंकि आपकी बुद्धि कठिन से कठिन समस्या का समाधान करने में समर्थ रहेगी अतः ऐसे कार्यो में आपका पूर्ण अधिपत्य रहेगा। साथ ही नौकरी आदि प्राप्त करने में भी आपको कोई विशेष परेशानी नहीं होगी। आपमें भावुकता के भाव की न्यूनता रहेगी तथा अपने कार्यो को भावुकता से नहीं बल्कि बुद्धि एवं विवेक से सम्पन्न करेंगी अतः सभी लोग आपकी बुद्धिमानी तथा भावुकता से प्रभावित रहेंगे तथा आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार या बैंक आदि क्षेत्रों से आप लाभ अर्जित कर सकती हैं। आप श्रृगांर प्रिय रहेंगी तथा प्रेम के क्षेत्र में भी पवित्रता को बनाए रखेंगी।

इस प्रकार शांत स्वभाव युक्त, परिश्रमी, कार्य करने में दक्ष, विवेकी, बुद्धिमान गुणवान तथा विचारक के रूप में आपकी पहचान रहेगी तथा धन ऐश्वर्य एवं वैभव से प्रसन्न

रहकर आनन्द पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी। यथोक्तम्

.छछ. कामक्रीड़ा सदगुणज्ञान सत्वकौशालाद्यैः संयुक्तः सुप्रसन्नः। लग्न कन्या यस्य जन्या जघन्यां कन्यां क्षीराब्धेरवाप्नोति नित्यम।।

.ऊछ.

जातकाभरणम्

अर्थात कन्या लग्न में उत्पन्न जातक काम क्रीड़ा में निपुण,सद्गुणी, ज्ञानवान, कार्यो में कुशल, सर्वदा प्रसन्न रहने वाला तथा लक्ष्मीवान होता है।

भाव फल

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में तुला राशि उदित हुई है जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आपका पारिवारिक जीवन सुख शान्ति एवं समृद्धि से युक्त रहेगा तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे तथा एक दूसरे को अपना पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी वाणी अत्यंत ही मधुर एवं प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगी तथा अपने वाक्चातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सिद्ध करने में भी सम्पन्न रहेंगी। इसके साथ ही प्रौढ़ावस्था में आप अल्प मात्रा में नेत्र संबधी कष्ट की भी अनुभूति कर सकती हैं।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा धार्मिक तथा शुभ एवं मांगलिक कार्यो को समय समय पर सम्पन्न करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त अन्य उत्सवों की भी प्रिय होंगी तथा ऐसे उत्सवों के आयोजन भी समय समय पर होते रहेंगे। जीवन में आपको पैतृक सम्पति भी अर्जित होगी। साथ ही अपने परिश्रम पराक्रम एवं सौभाग्य से भी वांछित मात्रा में धनऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में सफल रहेंगी। परिवार को सुख सुविधा तथा प्रसन्नता प्रदान करना आपका मूल उददे्श्य रहेगा। समाज में आप एक आदरणीया महिला होंगी तथा सौभाग्य से अपना जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगी। साथ ही व्यापार संबधी लाभ भी समय समय पर होता रहेगा।

भाव फल

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन, लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति प्रबल रहेगी तथा किसी भी वस्तु को आप चिर काल तक नहीं भूलेंगे। आप एक आत्म विश्वासी, साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी तथा अपने इन्हीं गुणों से सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगी तथा इनमें आपको इच्छित सफलता भी प्राप्त होगी। मंगल के प्रभाव से आपकी निर्णय लेने की शक्ति दृढ़ रहेगी तथा मस्तिष्क भी हमेशा सक्रिय एवं सजग रहेगा।

जीवन में भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगी तथा उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। साथ ही आप भी उनका पूरा ध्यान रखेंगी एवं सुख दुख में उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके प्रति वे हमेशा आज्ञाकारी, विश्वसनीय तथा कर्तव्य परायण रहेंगे। अतः पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि के लिए उनकी गलतियों को भी क्षमा कर देंगी। साथ ही जमीन जायदाद आदि से भी युक्त रहेंगी एवं इससे आपको प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा। आप परेशानी, क्रोधावस्था तथा अनावश्यक वादविवाद आदि में अप्रिय स्थिति से बचने में समर्थ रहेंगी। अपनी नेतृत्व प्रतिभा तथा अन्य गुणों से समाज में आप एक गणमान्य महिला होंगी। आधुनिक संचार संबधी महत्वपूर्ण उपकरण यथा टेलीफोन, टेलीविजन तथा वाहन आदि से आप युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगी । यदा कदा संगीत के प्रति भी आप रूचिशीलता का प्रदर्शन करेंगी । दूर समीप की यात्राओं से भी आपको लाभ होगा। इसके अतिरिक्त आप पराक्रमी कार्यो को सम्पन्न करेंगी तथा अन्य जनों से यदा कदा विवाद भी होगा अतः सतर्क रहें।

भाव फल

माता, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, जायदाद एवं शिक्षा

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है । अतः इसके प्रभाव से आपकी माता जी एक श्रेष्ठ गृहिणी होगी तथा आपके पिता के मामलों में कम ही हस्तक्षेप करेंगी। साथ ही वे बिना पूछे कभी भी किसी को सलाह नहीं देंगी वह प्रवृति से शांत चतुर तथा योग्य महिला होंगी तथा किसी भी स्थिति से सामंजस्य करने में हमेशा समर्थ रहेंगी। पति के प्रति उनका व्यवहार नम्र रहेगा तथा यदि वे कोई गलत निर्णय लेते हैं तो उन्हे उचित सलाह देकर सही तथ्य का आभास करायेंगी। साथ ही वे विश्वसनीय, कर्तव्य-परायण तथा प्रसन्नचित होंगी तथा बुद्धिमता का भाव भी उनमें विद्यमान रहेगा।

आपका आवास स्थल सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा साथ ही किसी अच्छे एवं विख्यात स्थान पर घर बनाने की इच्छुक रहेंगी। आप आवास के लिए विस्तृत स्थान का चुनाव करेंगी जिसमें आप मित्रों एवं अतिथियों सहित पूर्ण मनोरंजन कर सकें। साथ ही घर के लिए कई प्रकार के भौतिक उपकरणों को खरीदेंगी तथा उनसे घर सुसज्जित करेंगी। इससे आपके घर की शोभा आकर्षक तथा दर्शनीय रहेगी। इस प्रकार सब तरह से सुसज्जित एवं आधुनिक आवास के लिए आप हमेशा यत्नशील रहेंगी जिसमें न्यूनाधिक रूप से आपको सफलता भी प्राप्त होगी । उत्तम वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगी तथा अपने स्तर के अनुसार इसका उपभोग करेंगी। पैतृक सम्पति भी आपको अर्जित होगी एवं इससे आपको लाभ प्राप्त होगा। विज्ञान, साहित्य या गणित आदि में आप उच्च शिक्षा अर्जित करेंगी। साथ ही गुप्त धन या विद्या भी आप जीवन में प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आप पराक्रम से धनार्जन करने वाली, सुखोपभोगी, वाहन युक्त उद्यमी तथा समाज में आदरणीय समझीं जाएंगी।

भाव फल

बुद्धि, सन्तान एवं प्रणय सम्बन्ध

आपके जन्म समय में पंचम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप बुद्धिमती, कूटनीतिज्ञ, चतुर तथा अपने कार्यो को करने में दक्ष रहेंगी। सामान्यतया शैक्षणिक कार्यकलापों पर आप विशेष परिश्रम करेंगी तथा उच्च शिक्षा अर्जित करने में आपको अवश्य सफलता प्राप्त होगी। वैदिक साहित्य के ज्ञानार्जन में भी रूचिशील रहेंगी तथा परिश्रम पूर्वक इसका तथा ज्योतिष संबधी ज्ञान भी प्राप्त करेंगी। साथ ही पुराने रीति रिवाजों को भी अवसरानुकूल स्वीकार करेंगी।

संतति से आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में इनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों को पूर्ण करने में हमेशा समर्थ रहेगी। पति एवं बच्चों से आपका पूर्ण लगाव रहेगा परन्तु उसका मुक्त प्रदर्शन करने में असमर्थ रहेंगी फलतः वे आपको समझने में गलती कर सकते है लेकिन समय के साथ साथ उनकी गलतफहमियां दूर होंगी तथा वे आपके आंतरिक स्नेह को समझने में समर्थ रहेंगे तथा परस्पर स्नेह के भाव में वृद्धि होगी। आप अपने आंतरिक भावों को अन्य जनों के समक्ष प्रस्तुत करने में असमर्थ रहेंगी। साथ ही भावुकता की भी आप में न्यूनता रहेगी तथा आपके सभी कार्य शनैः शनैः तथा परिश्रम पूर्वक सम्पन्न होंगे। संतति पक्ष से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा वे उच्चशिक्षा अर्जित करेंगे तथा वाहन आदि से युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप अच्छे विचारों से युक्त यदा कदा कठोर कार्य करने वाली होगी एवं हृदय में भी यदा कदा कठोर भाव की उत्पति हो सकती है।

Sample

भाव फल

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा आयु भी दीर्घ होगी। आप एक दयालु प्रवृत्ति की महिला होंगी परन्तु यदा वार्तालाप में कठोर शब्दों का प्रयोग कर सकती है इससे कई लोग आपसे विरोध की भावना रखेंगे। साथ ही लोग आपके वैभव एवं खुशाहली से ईर्ष्या के कारण भी आपसे शत्रुता का भाव रखेंगे। यद्यपि आप एक सम्मानीया महिला होंगी तथापि आपका विरोधी पक्ष भी प्रबल रहेगा। आप अपने पारिवारिक सदस्यों पर अत्यधिक व्यय करेंगी। अतः इसी परिपेक्ष्य में आपको ऋण आदि भी लेना पड़ सकता है। इसके भुगतान में विलम्ब के कारण ऋणदाता द्वारा आपके सम्मान में हानि की संभावना हो सकती है लेकिन अपनी प्रतिभा तथा अधिकार के बल पर आप इन समस्याओं का सामना एवं समाधान करने में समर्थ रहेंगी।

आपका सेवक वर्ग आज्ञाकारी रहेगा तथा पूर्ण ईमानदारी से आपकी सेवा करने में तत्पर रहेंगे। अपने कार्य से वे आपको सन्तुष्ट रखेंगे लेकिन यदा कदा इनसे मान हानि की भी संभावना रहेगी अतः इनसे व्यक्तिगत कलह तथा कीमती वस्तुओं को हमेशा दूर रखना चाहिए। मुकद्दमे आदि कार्यो के प्रति आप लापरवाह रहेंगी परन्तु आपको ऐसे मामलों का सावधानी एवं सतर्कता पूर्वक अवलोकन करना चाहिए तथा अपने व्यापारिक तथा अन्य हिसाब को सही रखना चाहिए। यदि आप इस प्रकार से नियमानुसार कार्य सम्पन्न करती रहें तो आपको किसी भी क्षेत्र में कोई विशेष परेशानी नहीं होगी। साथ ही फौजदारी मुकद्दमे में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

मामा मामियों से आपके संबध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे। प्रत्यक्ष रूप से तो आपके प्रति वे सदभावना का प्रदर्शन करेंगे परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से उनकी आपके सहयोग आदि में कोई भी रूचि नहीं रहेगी। अतः संबधों में मधुरता रखने के लिए बुद्धिमता का प्रयोग करना चाहिए। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में आप गुर्दे तथा उदर संबन्धी परेशानी की अनुभूति कर सकती है। अतः युवावस्था में खान पान संबंधी परहेज अवश्य रखें।

भाव फल

दम्पति, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है अतः इसके प्रभाव से आपको पति देखने में सुन्दर, आकर्षक बुद्धिमान तथा सुशिक्षित व्यक्ति होंगे। आप दोनों का परस्पर उत्तम सामंजस्य रहेगा अतः दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। दाम्पत्य जीवन को आप सामाजिक आवश्यकता तथा बन्धन समझकर स्वीकार करेंगे। पति की सुख सुविधाओं का आप पूरा ध्यान रखेंगी तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी इससे आपका दाम्पत्य जीवन उत्तम रहेगा ।

व्यापार या व्यवसाय के क्षेत्र में आपको अत्यन्त ही बुद्धिमता से अपने साझेदार का चुनाव करना चाहिए। आप एक परिश्रमी महिला होंगी तथा निरंतर कार्य करने की आप में क्षमता विद्यमान रहेगी जब आप किसी भी कार्य एवं योजना को अन्तिम रूप प्रदान करेंगी तब आपको एकांत की आवश्यकता होगी। अपने इसी परिश्रम एवं योग्यता से आप जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होगी तथा व्यापार या नौकरी में उन्नति के शिखर पर पहुँचेंगी। आपका बाहर लगा हुआ धन परेशानी से ही वापिस होगा अतः व्यापार की अपेक्षा नौकरी करना ही आपके लिए श्रेयकर रहेगा। आपके या आपके पति के लिए एजेंसी, लेखा या द्रव्य से संबधित कार्य, सिचांई विभाग तथा शिक्षा विभाग उत्तम रहेगा तथा इन क्षेत्रों में कार्य करने से आसानी से उन्नति तथा सफलता अर्जित करेंगे। वृष मकर कर्क तथा वृश्चिक लग्न के जातक आपके लिए उपयुक्त रहेंगे। अतः इनसे विवाह संबध व्यापार या मित्रता आदि करने से आपको लाभ प्राप्त होगा। अतः सुखी जीवन के लिए इन्हीं से संबध स्थापित करने चाहिए। इसके अतिरिक्त आपके पति बुद्धिमान, परम्परानुसार धार्मिक कार्य सम्पन्न करने वाले, विश्वसनीय तथा कई कलाओं से युक्त रहेंगे।

भाव फल

दहेज, बीमा आयु एवं दुर्घटना

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी आध्यत्म ज्यौतिष या तंत्र मंत्र के प्रति विशेष रूचि नहीं रहेगी। इसका मुख्य कारण यह होगा कि आप अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण व्यस्त रहेंगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने कार्यो को सम्पन्न करेंगी तथा भाग्य की अपेक्षा कर्म पर ही अधिक विश्वास करेंगी। इस प्रकार व्यस्तता तथा तत्परता के कारण आपके पास समय का अभाव रहेगा। यदि आपके पास समय बचे तो आप अन्यत्र उसका सदुपयोग करना पसन्द करेंगी लेकिन आध्यात्म संबन्धी प्रवचनों का आप यदा कदा श्रवण कर सकती हैं। जीवन में आपको पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी तथा विस्तृत जमीन जायदाद की स्वामिनी बनेंगी। यदि आप इसका विक्रय भी करेंगी तो इससे आपको वांछित कीमत मिलेगी। इसकी कीमतों में निरन्तर वृद्धि के कारण इसे इच्छित कीमत पर बेचकर वांछित धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा ससुराल में किसी प्रकार की कमी नहीं होगी तथा सर्वप्रकार के सुख संसाधनों से वे युक्त रहेंगे। बीमा आदि करने से भी आपको इच्छित लाभ होगा। अतः समय समय पर आप अपना तथा महत्वपूर्ण वस्तुओं का मकान या अन्य का बीमा करवाती रहें। आपकी कुंडली में घर में चोरी आदि की समस्याएं अल्प रहेंगी तथापि सुरक्षा वश आपको बहुमूल्य वस्तुओं को सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए लेकिन दुर्घटना आदि के प्रति आपको पूर्ण रूप से सचेत रहना चाहिए अन्यथा न्यूनाधिक रूप से ऐसी घटना जीवन में घट सकती है लेकिन उससे कोई विशेष हानि नहीं होगी। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा सामान्यतया अपना सांसारिक जीवन सुख पूर्वक ही व्यतीत करेंगी।

भाव फल

सौभाग्य, प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी तथा यह गुण आपको पैतृक एवं पारिवारिक संस्कारों से प्राप्त होगा। धार्मिक कार्य कलापों को आप श्रद्धा पूर्वक सम्पन्न करेंगी तथा दैनिक पूजा या पाठ आदि में भी तत्पर रहेंगी। यद्यपि युवावस्था में दैनिक पूजा या ध्यान करने में असमर्थ सी रहेंगी परन्तु ईश्वर के प्रति आपकी पूर्ण आस्था विद्यमान रहेगी। साथ ही आध्यात्मिक तथा ध्यान योग के प्रति भी रूचिशील रहेंगी तथा उपरोक्त विषयों के ग्रंथों का रूचि पूर्वक अध्ययन करेंगी। आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति भी प्रबल रहेगी तथा ज्यौतिष आदि शास्त्रों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा इनका न्यूनाधिक ज्ञानार्जन में भी रूचिशील रहेंगी इसके अतिरिक्त आपके पूर्वाभास तथा भविष्य वाणियां भी सत्य सिद्ध होंगी।

उच्च शिक्षा प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगी तथा इसके द्वारा समाज में इच्छित मान सम्मान तथा प्रसिद्धि प्राप्त होगी। साथ ही तीर्थ स्थानों की भी आप यात्रा करेंगी जिससे आपको ज्ञान तथा लाभ अर्जित होगा। वैदिक साहित्य में भी आपकी रूचि रहेगी तथा वृद्धावस्था में अपना अधिकांश समय भगवत भजन में व्यतीत करेंगी आप अपने परिश्रम एवं सौभाग्य से वैभवशाली जीवन व्यतीत करने में भी समर्थ रहेंगी।

पौत्रों के द्वारा आपको इच्छित सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। साथ ही अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के द्वारा इस जीवन में सुख एवं वैभव अर्जित करेंगी। इसके अतिरिक्त आप दीनों की सहायता करने वाली, दानी, सर्व अलंकरों से युक्त तथा अतिथि सेवा में तत्पर रहकर धार्मिक प्रवृति का अनुपालन करती हुई अपने जीवन को आनन्द पूर्वक व्यतीत करेंगी।

भाव फल

पिता, व्यवसाय एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपके पिताजी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को परिश्रम पूर्वक करने में वे सदैव तत्पर रहेंगे। वे दृढ़ता पूर्वक अपने निश्चय पर अटल रहेंगे तथा इससे उनको वांछित सफलता प्राप्त होगी। सामान्यतया वे उदार प्रवृति से युक्त जिज्ञासु तथा निरंतर कार्य करने में संलग्न रहेंगे परन्तु जीवन में कई परिवर्तनों का उनको सामना करना पड़ेगा।

व्यवसाय के क्षेत्र में साझेदारी के कार्यो से आपको विशेष लाभ नहीं होगा लेकिन नौकरी आदि के क्षेत्र में आपको इच्छित उन्नति एवं मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त होगी। यदि आपको अत्यावश्यक रूप से साझेदार का चुनाव करना ही पड़े तो अत्यन्त ही सोच समझकर इस कार्य को सम्पन्न करना चाहिए। आपके लिए उचित कार्य स्थल लेखा विभाग जो जल या द्रव से संबधित हो अनुकूल एवं आसानी से उन्नतिकारक रहेंगे। साथ ही अध्यापन. फिल्म वितरक तथा क्षेत्रीय नेता के रूप में सम्मान एवं लाभ अर्जित कर सकती हैं। सरकारी स्रेतों से आपको इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा इनसे उचित वैभव एवं ऐश्वर्य अर्जित करेंगी। इसके अतिरिक्त आप कार्य करने में दक्ष , श्रेष्ठ जनों की आज्ञाकारी, धार्मिक या पुण्य संबधी कार्यो में रूचिशील स्नेहशील स्वभाव से युक्त तथा प्रभावी महिला होंगी एवं समाज से यथोचित मान सम्मान अर्जित करेंगी।

भाव फल

लाभ, मित्र, समाज, ज्येष्ठ भ्राता एवं आकांक्षाएं

आपके जन्म समय में एकादश भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में समर्थ रहेंगी तथा अन्य क्षेत्रों में भी सौभाग्यशाली रहेंगी। माता के द्वारा आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित मात्रा में धन लाभ प्राप्त करेंगी या वे किसी उद्यम आदि में आपको किसी प्रकार का सहयोग प्रदान कर सकती है। साथ ही आप जल से उत्पन्न पदार्थो के द्वारा यथा रत्न या वस्त्र आदि के व्यापार अथवा कार्य से धनार्जन करेंगी। यदि आप कार्यरत नहीं है तो उपरोक्त आय स्रोतों से आपके पति लाभ अर्जित करेंगे। इस प्रकार स्वपरिश्रम एवं सौभाग्य से अपनी आकाक्षांओं तथा इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ होंगी।

आपकी कुंडली के अनुसार ज्येष्ठ भाइयों की अपेक्षा बहिनों से आपको इच्छित सहयोग लाभ एवं स्नेह की प्राप्ति होगी साथ ही माताजी से भी आप वांछित स्नेह एवं सुख की प्राप्ति होगी। आपकी मित्रता का क्षेत्र विस्तृत रहेगा तथा मित्र मंडली में आदरणीया रहेंगी। आपके सभी मित्र गुणवान शिक्षित तथा बुद्धिमान होंगे। अवस्था के साथ साथ सभी सामाजिक जनों एवं मित्रों के प्रति आपके मन स्नेह एवं अपनत्व की भावना उत्पन्न होगी तथा उन सबकी सेवा एवं सहायता के लिए तत्पर रहेंगी। परिवार के प्रति आपके मन में पूर्ण आकर्षण रहेगा तथा अपने अधिकाशं समय को पारिवारिक जनों के मध्य ही व्यतीत करेंगी। साथ ही अपने क्षेत्र एवं समाज में आपकी प्रसिद्धि रहेगी। जीवन में आपको कोई विशिष्ट सामाजिक सम्मान भी प्राप्त होगा। इस प्रकार आपका सामान्य जीवन सपरिवार सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

भाव फल

हानि, बन्धन, कर्ज, आवास परिवर्तन एवं मोक्ष

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आपकी कार्य क्षेत्र की उन्नति में सुदृढ़ता रहेगी तथा भूमि से उत्पन्न उत्पादों के द्वारा आपको वांछित लाभ होगा। आप शीघ्रातिशीघ्र धनवान होने की कामना करेंगी। अतः इस उदद्देश्य की पूर्ति के लिए आप अथक परिश्रम करेंगी। आर्थिक क्षेत्र में आप अत्यंत ही सतर्कता का परिचय देंगी तथा पैसा कहां से आकर कहां जा रहा है इसका आपको पूर्ण ध्यान रहेगा। साथ ही अत्यधिक सोच विचारकर आप व्यय करेंगी इस प्रवृति से आप पूंजी निवेश में अधिक धन लगाएंगी जिससे अनुकूल बचत भी बनी रहेगी। आप मध्यमवस्था तक समाज के समक्ष अपने आपको एक धनवान महिला के रूप में स्थापित करने में समर्थ रहेंगी।

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी एवं बैक में आपका स्थान सम्मानीय रहेगा। आपके पास सामान्यतया कोई व्यसन नहीं होंगे तथा शौक भी विशेष नहीं रहेगा। अतः आपका व्यय उचित एवं अनुकूल मात्रा में होगा जिससे आर्थिक बचत बनी रहेगी। परिवार के प्रति आप अपनी पूर्ण जिम्मेवारी निभाएंगी तथा उनकी सुख सुविधाओं के लिए समय समय पर आवश्यक व्यय करती रहेगी साथ ही बच्चों के रहन सहन, खान पान तथा अन्य स्तर में भी वृद्धि करने में तत्पर रहेंगी।

आपको यात्रा करना रूचिकर लगेगा वैसे आपकी प्रवृति भ्रमण प्रिय रहेगी आपकी यात्राएं व्यवसाय या कार्य क्षेत्र से संबधित रहेगी। साथ ही यदा कदा भ्रमण या दर्शनीय स्थानों की सैर के लिए भी यात्रा करेंगी। इसके अतिरिक्त जीवन में एक बार आपकी अवश्य ही विदेश यात्रा होगी जिसके प्रभाव से आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी तथा सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

Sample

फलादेश – 2013

गोचरवश बृहस्पति का भ्रमण इस समय आपकी कुंडली में दशम भाव में रहेगा अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ ही रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आपको इच्छित सफलता मिलेगी तथा उन्नति मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे। इस समय आपके संबंध राजनैतिक महत्व के लोगों तथा उच्चाधिकारी वर्ग से बनेंगे। जिनसे समय समय पर आप वांछित सहयोग एवं लाभ प्राप्त करती रहेंगी। साथ ही राज्यस्तर पर आपको किसी विशेष सम्मान की प्राप्ति भी हो सकती हैं। पारिवारिक सुख एवं शान्ति तथा समृद्धि भी इस समय अच्छी रहेगी तथा सभी पारिवारिक जन आपस में मिलजुल कर रहेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष आपके लिए शुभ रहेगा तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा आय स्राोतो में भी वृद्धि होगी। इस समय आप कार्याधिक्य के कारण व्यस्त रहेंगी तथा विश्राम करने में असमर्थ रहेंगी। साथ ही दूसरे लोगो से भी आपको विनम्रता का व्यवहार करना चाहिए। परन्तु अन्य गोचर तथा दशाफल भी अशुभ रहेंगे अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता की अनुभूति होगी तथा परिश्रम भी अधिक करना प ड़ेगा।।

शनि की स्थिति गोचर वश इस वर्ष द्वितीय भाव में रहेगी अतः इसके प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा पारिवारिक जनों के मध्य परस्पर तनाव एवं मतभेद का वातावरण विद्यमान रहेगा। साथ ही आपकी मानसिक स्थिति भी विशेष अच्छी नहीं रहेगी तथा तनाव एवं असन्तोष बना रहेगा। लेकिन अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों में आप परिश्रम एवं संघर्ष से न्यूनाधिक सफलता अर्जित कर सकेंगी। साथ ही लाभ भी प्राप्त होगा। भौतिक एवं आर्थिक स्थिति इस समय विशेष अच्छी नहीं रहेगी तथा धनार्जन अनावश्यक मात्रा में होगा। इस समय शत्रु या विरोधी पक्ष भी आपके लिए प्रबल रहेगा जिससे व्यापार या नौकरी आदि में उन्नति मार्ग में बाधाएं आएंगी।

साथ ही इस समय अन्य गोचर एवं दशाफल भी विशेष अनुकूल नहीं रहेंगे एवं शनि की साढ़ेसाती की अन्तिम ढैया का प्रभाव भी रहेगा फलतः सांसारिक महत्व के कार्यों में बाधाएं उत्पन्न होगी तथा कार्य क्षेत्र में भी आपको कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। अतः इन समस्याओं को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए। साथ ही शनिवार को बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे आपके अशुभ प्रभावों में न्यूनता होगी तथा शुभ प्रभाव प्राप्त करने में आप सफल रहेंगी।

इस वर्ष में गोचरीय भ्रमण के अनुसार राहु की द्वितीय तथा केतु की अष्टम भाव में स्थिति रहेगी। अतः इसके प्रभाव से वर्ष विशेष अच्छा नहीं रहेगा। पारिवारिक

सुख शान्ति तथा समृद्धि इस समय मध्यम ही रहेगी तथा पारिवारिक जनों के परस्पर मतभेद तथा संबंधों में तनाव का वातावरण रहेगा। साथ ही एक दूसरे के प्रति सहयोग एवं स्नेह के भाव में भी न्यूनता रहेगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा एवं मन से भी आप उद्विग्न तथा अशान्त सी रहेंगी। आर्थिक दृष्टि से वर्ष विशेष शुभ नहीं रहेगा इस समय धनार्जन आवश्यक मात्रा में ही होगा परन्तु व्ययाधिक्य के कारण किंचित परेशानी हो सकती है। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में भी अत्यधिक पराक्रम एवं संघर्ष से ही किंचित उन्नति तथा लाभ की प्राप्ति हो सकती है। इस वर्ष में आप न्यूनाधिक रूप से जायदाद संबंधी क्रय विक्रय भी कर सकती है।

इसके अतिरिक्त इस समय अन्य गोचर तथा दशा फल अशुभ ही रहेंगे अतः व्यापार या कार्य क्षेत्र की उन्नति में भी विलम्ब एवं व्यवधान उत्पन्न होगा जिससे शुभ कार्य यथा समय सिद्ध नहीं होंगे अतः शुभ फलों की प्राप्ति तथा अशुभ फलों में न्यूनता करने के लिए आपको राहु केतु की नियमित रूप से पूजा, जप तथा दानादि कार्य करने चाहिए। इससे शुभ फलों में वृद्धि होगी।

फलादेश – 2014

इस समय गोचरवश बृहस्पति का संक्रमण आपकी कुंडली में एकादश भाव में रहेगा अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण एवं सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय आपके नवीन आय साधनों में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी अतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ रहेगी। व्यापारिक एवं कार्यक्षेत्र में आपको वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी। साथ ही नौकरी या राजनीति में आपको किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति भी हो सकती हैं। ज्योतिष शास्त्र के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न हो सकती हैं तथा अत्यन्त ही व्यस्तता तथा कार्याधिक्य के उपरान्त भी आप मानसिक प्रसन्नता एवं संतुष्टि का अनुभव करेंगी। समाज में भी इस समय आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा हार्दिक आदर भी प्रदान करेंगे । साथ ही इस इस वर्ष में अन्य गोचरफल एवं दशाफल भी आपके लिए शुभ रहेंगे। अतः यह वर्ष अत्यन्त ही शुभ एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

इस वर्ष में गोचर वश शनि का परिभ्रमण द्वितीय भाव में रहेगा अतः इसके प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि अच्छी रहेगी तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे। साथ ही आपकी भौतिक तथा आर्थिक स्थिति भी अनुकूल रहेगी एवं प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगी। शत्रु एवं विरोधी पक्ष इस समय आपसे पराजित रहेगा फलतः व्यापार या नौकरी के क्षेत्र में कमजोर विपक्ष के कारण आपको उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी। आपकी मानसिक स्थिति भी सामान्यतया अच्छी रहेगी तथा शान्ति पूर्वक अपने सांसारिक कार्यकलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी।

साथ ही इस समय आप गोचर एवं दशाफल भी आपके लिए अनुकूल रहेंगे अतः सर्वत्र सफलता अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगी तथा उत्साह एवं पराक्रम का भाव मन में बना रहेगा। लेकिन शनि की साढ़े साती की अन्तिम ढैया होने के कारण यदा कदा न्यूनाधिक परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। अतः इसके अशुभ फलों को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन एवं दान करना चाहिए तथा शनिवार को बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए इससे आपके लिए शुभ फलों में वृद्धि होगी।

इस वर्ष में गोचर वश राहु की स्थिति द्वितीय तथा केतु की स्थिति अष्टम भाव में रहेंगी अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्य रहेगा। इस समय पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि अनुकूल रहेगी तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे तथा एक दूसरे को अपना सकारात्मक सहयोग प्रदान करेंगे। शारीरिक एवं मानसिक रूप से इस समय आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगी तथा सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य उत्साह

तथा परिश्रम से सम्पन्न होंगे। आर्थिक दृष्टि से भी समय सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही आप जायदाद संबंधी कोई लाभदायक क्रय विक्रय भी इस समय सम्पन्न कर सकती हैं।

इसके साथ ही इस वर्ष में अन्य गोचर तथा दशा फल शुभ रहेंगे। अतः आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय पूर्ण होंगे एवं कार्य क्षेत्र में भी उन्नति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे। इस प्रकार वर्ष आपके लिए अच्छा ही रहेगा।

फलादेश – 2015

इस समय गोचरवश बृहस्पति का संक्रमण आपकी कुंडली में एकादश भाव में रहेगा अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण एवं सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय आपके नवीन आय साधनों में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी अतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ रहेगी। व्यापारिक एवं कार्यक्षेत्र में आपको वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी। साथ ही नौकरी या राजनीति में आपको किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति भी हो सकती हैं। ज्योतिष शास्त्र के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न हो सकती हैं तथा अत्यन्त ही व्यस्तता तथा कार्याधिक्य के उपरान्त भी आप मानसिक प्रसन्नता एवं संतुष्टि का अनुभव करेंगी। समाज में भी इस समय आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा हार्दिक आदर भी प्रदान करेंगे । साथ ही इस इस वर्ष में अन्य गोचरफल एवं दशाफल भी आपके लिए शुभ रहेंगे। अतः यह वर्ष अत्यन्त ही शुभ एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

इस वर्ष शनि का भ्रमण आपकी कुंडली में तृतीय भाव में रहेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आपके विगत सभी रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे तथा उनमें आपको इच्छित सफलता प्राप्त होगी। व्यापारिक तथा आर्थिक स्थिति भी इस समय सुदृढ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ होता रहेगा। इस समय आपका कोई उन्नति कारक परिवर्तन भी हो सकता हैं। इस वर्ष में आपकी लम्बी दूरी की कोई महत्वपूर्ण यात्रा भी समपन्न होगी जिससे आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा। नौकरी तथा राजनीति के क्षेत्र में आप की उन्नति के अवसर बनेंगे तथा किसी उच्च पद को प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। इससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को हृदय से स्वीकार करेंगे साथ ही सेवक वर्ग का सुख भी आपको प्राप्त होगा। इसके इस समय अन्य गोचरफल भी आपके लिए अच्छे नहीं रहेंगे अतः उपर्युक्त शुभ फलों में वृद्धि होती रहेगी जिससे शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी।

इस वर्ष गोचर वश राहु की स्थिति राशि तथा केतु की स्थिति सप्तम भाव में रहेंगी। अतः इसके प्रभाव से आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगी परन्तु यदा कदा मानसिक उद्विग्नता बनी रहेगी। इस समय आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा परस्पर संबंधों में मधुरता रहेंगी लेकिन पति का स्वास्थ्य किंचित मात्रा में प्रभावित हो सकता है। आर्थिक दृष्टि से वर्ष आपके लिए सामान्य रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगी। कार्य क्षेत्र में भी आप पराक्रम से उन्नति प्राप्त करेंगी तथा सामाजिक मान प्रतिष्ठा भी बनी रहेगी। इस समय पुराने सम्पर्को में कमी होगी परन्तु भविष्य के लिए लाभदायक नवीन सम्पर्क स्थापित होंगे।

इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर फल तथा दशा भी अनुकूल रहेगी अतः सर्वत्र आपके लाभमार्ग एवं उन्नति के क्षेत्र प्रशस्त होंगे जिससे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको यथा समय सफलता प्राप्त होगी। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी।

Sample

फलादेश – 2016

इस समय गोचरीय परिभ्रमण से बृहस्पति की स्थिति अष्टम भाव में रहेंगी अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु मानसिक रूप से आप यदा कदा कष्ट की अनुभूति करेंगी। आर्थिक स्थिति भी इस समय सामान्य ही रहेंगी परन्तु यदा कदा व्ययाधिक्य के कारण आर्थिक विषमता हो सकती है लेकिन लाभमार्ग प्रशस्त रहेंगे। इस वर्ष में आप किसी शुभ एवं मांगलिक कार्य पर व्यय भी कर सकती है। कार्य क्षेत्र में उन्नति की दृष्टि से वर्ष मध्यम रहेगा परन्तु इसमें पराक्रम एवं परिश्रम से आप न्यूनाधिक सफलता अर्जित करने में सफल हो सकती है। इस समय आपकी कोई दूर समीप की यात्रा सम्पन्न होगी तथा इसमें व्यय भी अधिक होगा परन्तु भविष्य में इससे लाभ के योग बनेंगे।

इस वर्ष में अन्य गोचर शुभ परन्तु दशा मध्यम रहेगी अतः सांसरिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पराक्रम एवं परिश्रम से ही न्यूनाधिक सफलता प्राप्त हो सकेगी। साथ ही यत्न पूर्वक आप आय स्राोतों की वृद्धि में भी तत्पर रहेंगी। अतः अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको बृहस्पति के व्रत, पूजन तथा दान संबंधी कार्य सम्पन्न करने चाहिए इससे आपको मानसिक शान्ति की भी अनुभूति होगी।

इस वर्ष में गोचरवश शनि की स्थिति आपकी कुंडली में तृतीय भाव में रहेगी अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आपके विगत सभी रुके हुए कार्य पूरे होंगे तथा उनसे आपको इच्छित सफलता मिलेगी। व्यापारिक तथा आर्थिक क्षेत्र में भी आप उन्नति शील रहेंगी तथा किसी उन्नतिकारक परिवर्तन की भी संभावना रहेगी। इस वर्ष आपकी कोई शुभ एवं महत्वपूर्ण लम्बी दूरी की यात्रा भी होगी जिससे आपको पूर्ण लाभ की प्राप्ति होगी। नौकरी या राजनीति के क्षेत्र में आपको किसी उच्च महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति की संभावना बनेगी जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा तथा आदर में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सत्कार करेंगे। साथ ही इस वर्ष में आपको सेवक वर्ग का सुख भी प्राप्त होगा लेकिन इसवर्ष में आपके लिए अन्य गोचरफल शुभ परन्तु दशा फल अनुकूल नहीं रहेगी अतः उपर्युक्त शुभ फलों में न्यूनता का आभास होगा तथा अशुभ फलों में अधिकता रहेगी अतः ऐसे समय में संयम एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

गोचरीय परिभ्रमण के अनुसार इस समय राहु की स्थिति अपकी कुंडली में द्वादश तथा केतु की स्थिति षष्ठ भाव में रहेगी। अतः इस समय आपको शुभ एवं अशुभ फल प्राप्त होंगे । शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से यह समय मध्यम रहेगा। इस समय आपकी लम्बी दूरी की यात्राएँ सम्पन्न होंगी तथा विदेश सम्बन्धी यात्रा भी सम्पन्न हो सकती हैं। साथ ही मनोरंजन आदि में आपका व्यय अधिक रहेगा। फलतः आर्थिक रूप से आपको परेशानी हो

सकती हैं। लेकिन षष्ठ भाव में केतु के प्रभाव से आप शत्रु वर्ग को पराजित करने में सफल रहेंगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे जिससे समाज में आपको इच्छित मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। कार्यक्षेत्र में भी इस समय आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी लेकिन नेत्र संबंधी कष्ट से आप परेशान रहेंगी । साथ ही अन्य गोचरफल भी अशुभ रहेंगे परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी अतः यदा कदा शुभ फलों में न्यूनता तथा अशुभ फलों में वृद्धि होगी।

फलादेश – 2017

इस वर्ष गोचरवश बृहस्पति आपकी कुंडली में प्रथम भाव में भ्रमण करेगा। इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। साथ ही सामाजिक क्षेत्र में मान सम्मान प्रतिष्ठा तथा यश की भी वृद्धि होगी। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में भी आपकी विशिष्ट उन्नति होगी तथा इच्छित लाभ एवं सफलता अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगी। इस वर्ष में अविवाहितों का विवाह भी हो सकता हैं। धर्म के प्रति इस समय आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा धार्मिक कार्यों को करने में तत्पर रहेंगी। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा तथा इस समय आपके आयस्राोतो में भी वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगी। इस वर्ष आपके सभी रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे तथा महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। कार्याधिक्यता के कारण विश्राम का अभाव रहेगा। तथा आप अपने को अत्यन्त ही अनुभवी समझेंगी। साथ ही अन्य गोचरफल एवं दशा भी शुभ फलदायक रहेगी। अतः इस वर्ष में आपको शुभफलों की ही अधिक प्राप्ति होगी।

इस वर्ष शनि का भ्रमण आपकी कुंडली में तृतीय भाव में रहेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आपके विगत सभी रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे तथा उनमें आपको इच्छित सफलता प्राप्त होगी। व्यापारिक तथा आर्थिक स्थिति भी इस समय सुदृढ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ होता रहेगा। इस समय आपका कोई उन्नति कारक परिवर्तन भी हो सकता हैं। इस वर्ष में आपकी लम्बी दूरी की कोई महत्वपूर्ण यात्रा भी समपन्न होगी जिससे आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा। नौकरी तथा राजनीति के क्षेत्र में आप की उन्नति के अवसर बनेंगे तथा किसी उच्च पद को प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। इससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को हृदय से स्वीकार करेंगे साथ ही सेवक वर्ग का सुख भी आपको प्राप्त होगा। इसके इस समय अन्य गोचरफल भी आपके लिए अच्छे नहीं रहेंगे अतः उपर्युक्त शुभ फलों में वृद्धि होती रहेगी जिससे शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी।

गोचरवश राहु की स्थिति आपकी कुंडली में द्वादश भाव में तथा केतु की स्थिति षष्ठ भाव में रहेगी अतः इनके प्रभाव से इस वर्ष में आपको शुभाशुभ फलों की प्राप्ति होगी शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा तथा मानसिक स्थिति भी विशेष अच्छी नहीं रहेगी तथा मन से आप असंतुष्टि की अनुभूति करेंगी । इस समय आपकी लम्बी दूरी की यात्राएँ भी सम्पन्न होंगी अतः यात्राओं में व्यय अधिक होगा तथा आप मनोरंजन संबंधी कार्यों में भी व्यय करेंगी । आर्थिक स्थिति भी इस समय मध्यम ही रहेगी लेकिन षष ठ भाव केतु के प्रभाव से आप अपने शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों को पराजित करने में समर्थ रहेंगी तथा समाज में सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे जिससे समाज में मान प्रतिष्ठा में

वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र में आप उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर होंगी लेकिन नेत्र संबंधी कष्ट से आप परेसानी की अनुभूति करेंगी परन्तु इस समय अन्य गोचर तथा दशाफल आपके लिए शुभ रहेंगे अतः शुभ फलों में वृद्धि होगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता होगी।

Sample

फलादेश – 2018

गोचरीय परिभ्रमण के अनुसार इस समय बृहस्पति आपकी कुंडली में द्वितीय भाव में भ्रमण करेगा अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा आयस्रोतों में भी वृद्धि होगी फलतः इच्छित मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। इस समय पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि अच्छी रहेगी तथा परिवार में सहानुभूति का वातावरण रहेगा। सामाजिक क्षेत्र में इस समय आप आदरणीय रहेंगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा आपका हार्दिक सम्मान करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा तथा यश में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्यों को सम्पन्न करने में भी आप इस समय रुचिशील रहेंगी। इस वर्ष में भी आपकी वाणी अत्यन्त ही ओजस्वी रहेगी फलतः सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपका अनुसरण करेंगे। साथ ही व्यापार या जायदाद से आपको लाभ की संभावना रहेगी। परन्तु अन्य गोचरफल इस समय अशुभ रहेंगे लेकिन दशा शुभ रहेगी अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता रहेगी परन्तु सामान्यतया शुभ ही रहेगा।

इस वर्ष में गोचरवश शनि चतुर्थ भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके प्रभाव से आपके लिए समय मध्यम रहेगा तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को आप परिश्रम एवं संघर्ष से पूर्ण करके उनमें न्यूनाधिक सफलता अर्जित करेंगी। बन्धु एवं परिवार से इस समय आपको मध्यम सहयोग मिलेगा साथ ही माता का स्वास्थ्य भी सामान्य रहेगा। आर्थिक स्थिति इस वर्ष मध्यम ही रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में ही धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम पूर्वक उन्नतिशील रहेंगी तथा ऋण लेकर आप कोई नवीन कार्य, आवास निर्माण या जमीन जायदाद संबंधी कार्यों को सम्पन्न कर सकती है। यद्यपि प्रारंभ में इससे समस्याएं उत्पन्न होंगी परन्तु भविष्य में लाभदायक सिद्ध होगा।

इस समय यद्यपि अन्य गोचर फल शुभ रहेंगे परन्तु दशाफल विशेष अनुकूल नहीं रहेगी एवं शनि की ढैया का प्रभाव भी रहेगा। फलतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में समय समय पर अनावश्यक व्यवधान आएंगे जिससे मानसिक असन्तुष्टि रहेगी। अतः इन अशुभफलों को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए तथा शनिवार के दिन मध्यमा अंगुली में बाएं हाथ में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ फलों में न्यूनता होगी तथा सामान्य सफलता अर्जित करने में आप सफल रहेंगी ।

गोचरवश इस वर्ष राहु की स्थिति आपकी कुडंली में एकादश भाव में तथा केतु की स्थिति पंचम भाव में रहेगी इसके प्रभाव से यह समय आपके लिए शुभफलदायक

रहेगा। व्यापारिक एवं कार्यक्षेत्र में आप उन्नतिशील रहेंगी तथा वांछित सफलताएँ भी आपको प्राप्त होती रहेंगी। साथ ही नौकरी एवं राजनीति आदि में आपको किसी उच्च पद की प्राप्ति भी हो सकती हैं। जिससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा वढेगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा यथोचित सम्मान भी देंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह समय आपके लिए शुभ रहेगा तथा इच्छित मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही आय साधनों में भी वृद्धि होगी लेकिन स्वभाव में यदा कदा क्रोध की अधिकता रहेगी तथा मन भी अशान्त तथा वैचेन रहेगा। इस समय सन्तति पक्ष से भी आपको कोई समस्या हो सकती हैं। परन्तु अन्य गोचरफल इस समय आपके लिए अशुभ रहेंगे लेकिन दशा शुभ रहेंगी अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता रहेगी तथा अशुभ फलों में वृद्धि होगी।

फलादेश – 2019

गोचरीय परीभ्रमण के अनुसार बृहस्पति इस समय आपकी कुंडली में तृतीय भाव में परिभ्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा। इस समय आपकी दूर समीप की यात्राएँ होंगी जिससे आपको लाभ तथा सम्मान दोनो की प्राप्ति होगी। साहित्य दर्शन तथा ज्योतिष आदि में भी आप रुचिशील रहेंगी तथा इनका अध्ययन रुचिपूर्वक करेंगी। पुराने मित्रवर्ग से इस समय आपको वांछित लाभ एवं सहयोग मिलेगा तथा नवीन मित्रों की भी प्राप्ति होगी जिससे भविष्य में लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह वर्ष अच्छा रहेगा तथा व्यापारिक एवं कार्यक्षेत्र में भी आपकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे। इस समय आप मानसिक संकीर्णता को छोड़कर विशालता का परिचय देंगी। फलतः सामाजिक जनों के मध्य आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आर्थिक दृष्टि से भी समय अच्छा रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी। लेकिन इस वर्ष में अन्य गोचरफल अशुभ रहेगा परन्तु दशाफल शुभ रहेगी अतः यदा कदा अशुभ फलों की प्राप्ति होगी तथा शुभ फलों में न्यूनता रहेगी जिससे परिश्रम अधिक करना पड़ेगा। परन्तु सामान्यतया शुभ फलों की ही प्रधानता रहेगी।

इस वर्ष में गोचरवश शनि चतुर्थ भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके प्रभाव से आपके लिए समय मध्यम रहेगा तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को आप परिश्रम एवं संघर्ष से पूर्ण करके उनमें न्यूनाधिक सफलता अर्जित करेंगी। बन्धु एवं परिवार से इस समय आपको मध्यम सहयोग मिलेगा साथ ही माता का स्वास्थ्य भी सामान्य रहेगा। आर्थिक स्थिति इस वर्ष मध्यम ही रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में ही धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम पूर्वक उन्नतिशील रहेंगी तथा ऋण लेकर आप कोई नवीन कार्य, आवास निर्माण या जमीन जायदाद संबंधी कार्यों को सम्पन्न कर सकती है। यद्यपि प्रारंभ में इससे समस्याएं उत्पन्न होंगी परन्तु भविष्य में लाभदायक सिद्ध होगा।

इस समय यद्यपि अन्य गोचर फल शुभ रहेंगे परन्तु दशाफल विशेष अनुकूल नहीं रहेगी एवं शनि की ढैया का प्रभाव भी रहेगा। फलतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में समय समय पर अनावश्यक व्यवधान आएंगे जिससे मानसिक असन्तुष्टि रहेगी। अतः इन अशुभफलों को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए तथा शनिवार के दिन मध्यमा अंगुली में बाएं हाथ में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ फलों में न्यूनता होगी तथा सामान्य सफलता अर्जित करने में आप सफल रहेंगी ।

गोचरीय परिभ्रमण के अनुसार इस समय आपकी कुंडली में राहु की

स्थिति दशम रहेगी तथा केतु की स्थिति चतुर्थ भाव में रहेगी इसके प प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। व्यापार में आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे तथा लाभ भी प्राप्त होगा। नौकरी या राजनीति के क्षेत्र में इस समय आपको किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति की भी संभावना रहेगी।साथ ही राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों से सम्पर्क बनेंगे अतः उनसे आप इच्छित मात्रा में लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेगी। समाज में भी इस समय आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे एवं समाज के मध्य आपको लोकप्रियता प्राप्त होगी । आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष अच्छा रहेगा तथा इच्छित मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त होगा परन्तु माता पिता या सास ससुर के स्वास्थ्य की दृष्टि से समय अच्छा नहीं रहेगा। यह समय मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से समय अच्छा नहीं रहेगा।शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वास्थ्य मध्यम ही रहेगा। वाहनादि के सुख की की भी इस वर्ष किंचित अल्पता हो सकती हैं। परन्तु अन्य गोचरफल आपके अशुभ लेकिन दशा शुभ रहेगी। अतः यदा कदा शुभ फलों में न्यूनता तथा अशुभ फलों में वृद्धि होगी।

फलादेश – 2020

इस वर्ष गोचरवश बृहस्पति की स्थिति आपकी कुंडली में चतुर्थ भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा। इस वर्ष शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगी। साथ ही परिवार में शान्ति, सुख एवं समृद्धि भी बनी रहेगी तथा सभी परिवारिक जन आपस में मिलजुल कर रहेंगे। इस वर्ष में आपकी सभी सोची हुई योजनाएँ पूर्ण होंगी तथा महत्वपूर्ण कार्य भी सम्पन्न होंगे। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में भी इस समय आप उन्नति तथा सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही आपको साथ के व्यक्तियों से भी यथोचित मान सम्मान प्राप्त होगा। इस समय आपको आवास जायदाद एवं वाहन सम्बन्धी लाभ एवं सुख की भी प्राप्ति हो सकती हैं। इसके साथ ही आप मातृपक्ष से उचित मात्रा में धन एवं लाभ भी प्राप्त कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त अन्यगोचरफल भी इस समय आपके लिए शुभ एवं अनुकूल फल प्रदान करने वाले होंगे। अतः आपके लिए यह वर्ष अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा तथा शुभ फलों की ही प्रबलता रहेगी।

इस वर्ष में गोचर वश शनि की स्थिति पंचम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप उत्साह एवं परिश्रम से सम्पन्न करेंगी। इस समय आपकी मानसिकता में बदलाव भी आएगा। समाज में इस समय आप लोकप्रिय रहेंगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आर्थिक दृष्टि से वर्ष उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। संतति पक्ष से इस समय आप प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगी तथा अपने कार्य क्षेत्र में वे उन्नतिशील रहेंगे। साथ ही पति का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं दाम्पत्य संबंधों में मधुरता रहेगी।

इस समय अन्य गोचर तथा दशा शुभफल प्रदान करेंगी अतः आपके सर्वत्र लाभ मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा इच्छित उन्नति भी प्राप्त करेंगी तथा राजनैतिक सम्पर्क से आप लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगी साथ ही इस वर्ष में आपको किसी विशिष्ट लाभ की भी संभावना रहेगी। अतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में तत्पर रहें तथा समय सदुपयोग करें।

गोचरवश इस समय राहु आपकी कुंडली में दशम भाव में तथा केतु चतुर्थ भाव में रहेगा। अतः इसके प्रभाव से आपका यह वर्ष शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। व्यापारिक क्षेत्र में आपको इच्छित सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा नौकरी या राजनीति में आपकी पदोन्नति की संभावना रहेगी। साथ ही राजनीतिक महत्व के व्यक्तियो से भी आपके सम्बन्ध बनेंगे जिनसे आप इच्छित मात्रा में लाभ एवं सहयोग अर्जित करेंगी। समाजमें इस समय आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को हृदय से स्- स्वीकार करेंगे तथा समाज के मध्य आप लोकप्रिय रहेंगी। आर्थिक दृष्टि से भी

वर्ष अनुकूल रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगी परन्तु माता पिता या सास ससुर का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से वर्ष अच्छा रहेगा तथा वाहनादि में भी यदा कदा न्यूनता की अनुभूति होगी। परन्तु अन्य गोचरफल तथा दशाफल अनुकूल रहेगा अतः उपर्युक्त शुभ फलों में वृद्धि रहेगी।

फलादेश – 2021

इस वर्ष गोचर वश बृहस्पति की स्थिति षष्ठभाव में रहेगी अतः यह समय आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा। इस समय शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगी तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को उत्साह तथा परिश्रम से सम्पन्न करेंगी। व्यापारिक अथवा कार्य क्षेत्र की स्थिति इस समय अच्छी रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक उन्नति के मार्ग पर आप अग्रसर रहेंगी। साथ ही किसी शुभ या मांगलिक कार्य पर आपके व्यय होने की भी संभावना रहेगी। आर्थिक स्थिति भी इस समय अच्छी रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी जिससे आप मानसिक शान्ति की अनुभूति करेंगी। इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर तथा दशा फल भी शुभ रहेंगे अतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में यथासमय सफलता मिलती रहेंगी अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया अच्छा ही रहेगा।

इस वर्ष में गोचर वश शनि की स्थिति पंचम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप उत्साह एवं परिश्रम से सम्पन्न करेंगी। इस समय आपकी मानसिकता में बदलाव भी आएगा। समाज में इस समय आप लोकप्रिय रहेंगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आर्थिक दृष्टि से वर्ष उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। संतति पक्ष से इस समय आप प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगी तथा अपने कार्य क्षेत्र में वे उन्नतिशील रहेंगे। साथ ही पति का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं दाम्पत्य संबंधों में मधुरता रहेगी।

इस समय अन्य गोचर तथा दशा शुभफल प्रदान करेंगी अतः आपके सर्वत्र लाभ मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा इच्छित उन्नति भी प्राप्त करेंगी तथा राजनैतिक सम्पर्क से आप लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगी साथ ही इस वर्ष में आपको किसी विशिष्ट लाभ की भी संभावना रहेगी। अतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में तत्पर रहें तथा समय सदुपयोग करें।

गोचरीय परिभ्रमण के फलस्वरूप इस वर्ष राहु की स्थिति आपकी कुंडली में नवम भाव तथा केतु की स्थिति तृतीय भाव में रहेगी। अतः इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए शुभ फलों के साथ साथ यदा कदा अशुभ फल भी प्रदान करेगा। इस समय धर्म के प्रति आपके मन विशेष श्रद्धा उत्पन्न नहीं होगी तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में समय समय पर व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे। साथ ही भाग्यबल की भी अल्पता रहेगी शारीरिक स्वास्थ्य इस समय आपका मध्यम ही रहेगा परन्तु स्वभाव में क्रोध की अधिकता रहेगी जिससे यदा कदा मानसिक परेशानी उत्पन्न होगी। साथ ही पारिवारिक चिन्ता भी मन में बनी रहेगी। लेकिन केतु के प्रभाव से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।

साथ ही समाज में भी मान प्रतिष्ठा तथा यश में अभिवृद्धि होगी। आर्थिक दृष्टि से भी समय अनुकूल रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में आप धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। व्यापारिक एवं कार्यक्षेत्र में भी आपकी उन्नति होगी तथा सफलता के मार्ग प्रशस्त होंगे। इसके साथ ही अन्य गोचर तथा दशाफल भी आपके लिए शुभ फल प्रदान करेंगे अतः शुभ फलों में वृद्धि होगी तथा अशुभ फल कम ही होंगे।

फलादेश – 2022

इस समय गोचरवश बृहस्पति की स्थिति आपकी कुंडली में सप्तम भाव में रहेगी अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए उत्तम रहेगा। व्यापारिक एवं कार्यक्षेत्र में इस समय आप वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगी साथ ही अचानक कोई लाभ एवं उपलब्धि भी प्राप्त हो सकती हैं। वेरोजगारों के लिए यह वर्ष शुभ रहेगा तथा उन्हें रोजगार मिलने की प्रबल संभावना रहेगी। इस समय अविवाहितों का विवाह भी हो सकता हैं। दाम्पत्य सुख के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा तथा परस्पर संबन्धों में भी मधुरता रहेगी। सामाजिक मान प्रतिष्ठा में आपकी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए शुभ रहेगा तथा आर स्रोतो में भी वृद्धि करके प्रचुर मात्रा में आप धन एवं लाभ अर्जित करने में आप कमर्थ रहेंगी । इसके अतिरिक्त अन्य गोचरफल तथा दशाफल भी अनुकूल रहेंगे तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सफल बनाने में समर्थ रहेंगी तथा आनन्दपूर्वक आपका समय व्यतीत होगा।

इस वर्ष में शनि गोचरवश आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में भ्रमण करेगा। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आपकी महत्वपूर्ण यात्राएँ होंगी तथा जिनसे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में भी आप धन एवं लाभ अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा आय स्रोतो में भी वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र में इस समय आपकी आश्चर्यजनक वृद्धि होगी तथा उच्चस्तर पर परिवर्तन के भी योग बनेंगे। साथ ही नौकरी तथा राजनीति में आपको किसी उच्च पद की भी प्राप्ति होगी। प्रतिद्वन्दियों तथा शत्रु को भी पराजित करने में आप समर्थ रहेंगी तथा इस समय आप किसी मुकद्दमे या प्रतियोगी परीक्षा में सफल हो सकेंगी इसके साथ ही इस वर्ष में आपके लिए अन्य गोचरफल तथा दशाफल भी शुभ रहेंगे। अतः आप अधिकाधिक शुभ फल प्राप्त करेंगी तथा कोई महत्वपूर्ण सफलता भी अर्जित करेंगी।

इस वर्ष में गोचर वश राहु की स्थिति अष्टम तथा केतु की द्वितीय भाव में रहेगी अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा। इस समय शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से आप स्वस्थ रहेंगी तथा मानसिक रूप से भी शान्त तथा प्रसन्न रहेंगी। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि इस समय अच्छी रहेगी तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे तथा एक दूसरे के प्रति स्नेह तथा सहयोग का भाव रखेंगे। आर्थिक स्थिति भी आपकी अनुकूल रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगी साथ ही इस वर्ष में आपको किसी विशिष्ट या अचानक लाभ की प्राप्ति हो सकती है तथा लाटरी सटटे या जुएं के द्वारा भी धन लाभ की संभावना रहेगी व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र की उन्नति एवं सफलता के लिए वर्ष शुभ रहेगा एवं स्वपराक्रम एवं बुद्धि से आप यथोचित

सफलता प्राप्त करने में समर्थ रहेंगी।

इसके साथ ही इस वर्ष में अन्य गोचर तथा दशा भी शुभ फल प्रदान करेंगे अतः सांसारिक महत्व के कार्यों को आप यथा समय सिद्ध करने में समर्थ रहेंगी। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी इस प्रकार यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा।